RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक : 29-30 एक प्रति 10 : रुपये
रविवार 15 व 22 अक्तूबर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का ऋषि निर्वाण एवं दीपावली विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आंधियों में दीपक जलाओ साथियो

ले०—डा. सारस्वत मोहन मनीषी ए-6 आदर्श सोसायटी, रोहणी दिल्ली

दिल से अन्धेरों को भगाओ साथियो।
आंधियों में दीपक जलाओ साथियो।
तेल की तलाश में न जाओ साथियो।
बातियों को खून में डुबाओ साथियो।

वायदा करो तो पूरा होना चाहिए। मांग भरदी तो नहीं रोना चाहिए।
यदि आग लगी आपके पड़ौस में। चैन की न नींद कभी सोना चाहिए।
बेटी न किसी की भी सतानी चाहिए। टी० वी० फ्रिज हेतु न जलानी चाहिए।
इतनी समझ में आनी चाहिए। लड़की न लकड़ी बनानी चाहिए।

डोलियां न अर्थियां बनाओ साथियो।
उतना ही खाओ जो कमाओ साथियो।

प्यास न बुझा सके वो पानी नहीं है। विश्व भूल जाए वो कहनी नहीं है।
रुकने का नाम तो स्वामी नहीं है। हार मान बैठे वो जवानी नहीं है।
नीतिहीन बातें सब छोड़ दीजिए। टूटी हुई माला फिर जोड़ दीजिए।
बादलों से अमृत निचोड़ लीजिए। कंसों की कलाइयां मरोड़ दीजिए।

गिरे हुए दीन को उठाओ साथियो।
एकता के बीज को बचाओ साथियो।

लक्ष्य पै न पहुंचे वो तीर नहीं है। खून पीता हो जो वो अमीर नहीं है।
सत्य बेचता हो वो फकीर नहीं है। झूठ बोलता हो वो कबीर नहीं है।
प्यार के बिना तो ज़िन्दगी अनाथ है। साथ छूट जाए वो भी कोई साथ है।
व्यर्थ में झुका रहे वो कैसा साथ है। उन्नति का नाम नहीं फुटपाथ है।

प्रेम की फुहार में नहाओ साथियो।
वेदना को वंदना बनाओ साथियो।

जनता को लूटे वो सिपाही नहीं है। लिखने से मुकरे वो स्याही नहीं है।
रास्ते को दोष दे वो राही नहीं है। प्यास को बढ़ाए वो सुराही नहीं है।
सांच को यहां कभी भी आंच नहीं है। आंच में जले वो कोई सांच नहीं है।
पत्थर तो पत्थर है कांच नहीं है। पक्षपाती जांच कोई जांच नहीं है।

फैशन की पूरियां न खाओ साथियो।
पुरखों के पुण्य को बचाओ साथियो।

दिल से अंधेरों को भगाओ साथियो। आंधियों में दीपक जलाओ साथियो।
तेल की तलाश में न जाओ साथियो। वातियों को खून में डुबाओ साथियो।

महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस

लेo—श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि दयानन्द जी को इस संसार से विदा हुए १३४ वर्ष होने लगे हैं। ३० अक्तूबर १८८३ की रात को जब सारा देश दीपावली मना रहा था तो उस समय वैदिक संस्कृति का यह सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया। परन्तु अपने जीवन में वह हमें बहुत कुछ सिखा गए, केवल सिखा ही नहीं गए हमें वे मार्ग भी बता गए जिस पर चलते हुए हम अपना और संसार का कल्याण कर सकते हैं। वह मार्ग वैदिक संस्कृति का मार्ग था। महर्षि दयानन्द जी ने वेदों की शिक्षा को जीवित किया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि महाभारत के ढाई हजार वर्ष के पश्चात श्री शंकराचार्य ने वेदों की तरफ संसार का ध्यान दिलाया और शंकराचार्य के ढाई हजार वर्ष के पश्चात महर्षि दयानन्द ने सोई हुई आर्य जाति को जगाया और उन्हें बताया कि यदि वह संसार में जीवित रहना चाहती है केवल जीवित ही नहीं बल्कि शक्तिशाली और प्रभावशाली बनना चाहती है तो उसे अन्त में वही मार्ग अपनाना पड़ेगा जो वेदों ने हमें बताया है। महाभारत के पश्चात हमारे देश की अवस्था दिन प्रतिदिन बिगड़ती गई। शंकराचार्य के समय तक लोग बिल्कुल ही वेदों को भूल चुके थे और हमारे देश में बौद्ध और जैन धर्म चारों तरफ फैल रहे थे। श्री शंकराचार्य ने उस आंधी को रोकने का प्रयत्न अवश्य किया परन्तु वह भी अत्यन्त युवावस्था में इस संसार से चले गए। इसलिए वेदों के वास्तविक स्वरूप को संसार के सामने लाने का श्रेय अगर किसी को मिल सकता है तो वह केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हैं। परन्तु जिस समय वह संसार के रंगमंच पर आए यहां कई मत-मतान्तर फैल चुके थे। हमारे अपने ही देश में इस्लाम और ईसाईयत पूरे जोर से आक्रमण कर रहे थे। हिन्दू जाति की अत्यन्त शोचनीय अवस्था थी। एक अनाथ बच्चे की तरह इसका कोई रखवाला नहीं था। कभी मुसलमान इसे अपनी ओर खींचते थे कभी ईसाई। जाति-पाति ने हिन्दू समाज को अन्दर से खोखला कर दिया था और ऐसा दिखाई दे रहा था कि कुछ समय के पश्चात आर्य जाति का कहीं नामो-निशान तक नजर न आऐगा। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने वेदों का नाद बजाया। सोए हुए भारत को एक बार फिर जगाया और हमें हमारी प्राचीन संस्कृति की प्रतिमा की याद दिला कर एक बार फिर अपने पांव पर खड़ा होने के योग्य बना दिया। परन्तु उसके कुछ समय के पश्चात वह हमें छोड़कर चले गए लेकिन जाने से पहले हमारे मार्गदर्शक का प्रबन्ध कर गए एक आर्य समाज के रूप में। वह हमें एक ऐसी संस्था दे गए जिसके जिम्मे उन्होंने यह काम लगाया कि उनकी अनुपस्थिति में उनके सन्देश को क्रियान्वित करेगी और इसमें सन्देह नहीं कि आर्य समाज ने बहुत कुछ किया। उसका गौरवमय इतिहास इस बात का साक्षी है कि देश में नई जागृति पैदा करने और उसके नए सांस्कृतिक और धार्मिक निर्माण में आर्य समाज ने जो योगदान दिया वह कोई दूसरी संस्था नहीं दे सकी। परन्तु जिन परिस्थितियों में से आज हमारा समाज गुजर रहा है, वह एक बार फिर आर्य समाज को आह्वान कर रहा है और उसे याद दिला रहा है कि उसने अभी वह ऋण चुकाना है। आज समाज में धर्म के नाम पर जो पाखण्ड फैल रहा है उससे समाज को मुक्त करने की आवश्यकता है। तथाकथित गुरूओं, बाबाओं के जाल से समाज को मुक्त कराने का कार्य केवल आर्य समाज ही कर सकता है। महर्षि दयानन्द के ऋण को चुकाने का एक ही ढंग है वह है आर्य समाज के संगठन को शक्तिशाली बनाकर उसे इस योग्य बनाया जाए कि वह इन सब विघटनकारी शक्तियों का मुकाबला कर सके जो आज इस समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रही हैं। महर्षि दयानन्द एक महान भारत का स्वपन लिया करते थे एक ऐसा भारत जिसमें कोई निर्धन न हो, कोई अशिक्षित न हो, जिसमें कोई दलित वर्ग न हो, जिसमें स्त्री जाति को सम्मानित स्थान दिया जाए, जिसमें ब्राह्मणों का आदर और सम्मान हो, क्षत्रियों के जिम्मे देश की रक्षा का काम हो, वैश्य व्यापार और उद्योग द्वारा देश की सम्पदा को बढ़ाने का प्रयत्न करें, एक ऐसा भारत जहां दिन रात वेदों की ऋचायें गूंजती रहे। महर्षि अपने जीवन में यह स्वप्न पूर्ण होता न देख सके क्योंकि हमारा देश पराधीन था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इसीलिए अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया था। वे जानते थे कि कोई भी राष्ट्र गुलामी की अवस्था में अपनी संस्कृति और सभ्यता का पूर्ण रूप से प्रचार-प्रसार नहीं कर सकता। परन्तु आर्य समाज के ऊपर यह संकल्प छोड़ गए कि उनके जाने के पश्चात वह उनके इस स्वप्न को साकार बनाने का प्रयत्न करेगी। यही है वह महर्षि का ऋण जिसे हमने चुकाना है।

दीपावली का पर्व प्रतिवर्ष हमारे लिए प्रेरणा लेकर आता है कि हम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से शिक्षा लेकर वेद रूपी ज्ञान की ज्योति से घर-घर को प्रकाशित करें। महर्षि निर्वाण

(शेष पृष्ठ 6 पर)

दीपावली पर्व एवं महर्षि निर्वाण दिवस

ले०—श्री प्रेम भारद्वाज महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

मनुष्य के जीवन में प्रकाश का अत्यधिक महत्व है। प्रकाश के अभाव में मनुष्य का जीवन अन्धे के समान है। दीपावली का पर्व हमारे जीवन में आशा रूपी ज्योति की नई किरण लेकर आता है। दीपावली की रात हम पहले एक दीया जलाते हैं और उस दीये से फिर कई दीये जलते हैं और फिर वह समय भी आता है जब धीरे-धीरे सब दीये बुझ जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में आर्य समाज के रूप में एक दीया जलाया था, वेद की एक ज्योति जलाई थी। उस आर्य समाज रूपी दीये से तथा वेद की ज्योति से वे उस अंधकार को समाप्त करना चाहते थे, जो कई शताब्दियों से हमारे देश पर छाया हुआ था। आर्य समाज का दीया जलाने के लिए और वेद की ज्योति को जलाने के लिए महर्षि ने अपना बलिदान दिया वह बलिदान एक प्रकार से उस दीये का तेल था जिसके सहारे वह जलता रहा। उसी से फिर पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज आदि और भी कई दीये जलते रहे और उनका प्रकाश सारे देश में फैलता रहा। आर्य समाज ने देश की जो सेवा की है, उसके विषय में इतिहासकारों ने बहुत कुछ लिखा है। प्राय: सब यह कहते हैं कि देश के नवजागरण और नव निर्माण में आर्य समाज का सबसे बड़ा योगदान रहा है। जब तक हम आजाद नहीं हुए थे, उस समय तक आर्य समाज एक ही समय में दो भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में लड़ाई लड़ रहा था। राजनैतिक क्षेत्र में भी और सामाजिक क्षेत्र में भी। उसने स्वाधीनता के संग्राम में अपनी जो आहुति दी थी,वह किसी दूसरी संस्था ने नहीं दी। आर्य समाज से प्रेरणा लेकर कितने ही लोग जेल गए और कितने ही फांसी पर भी चढ़ गए थे। जहां तक सामाजिक क्षेत्र का सम्बन्ध है, उसमें दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा, हिन्दी प्रचार, गौ रक्षा, स्वदेशी के पक्ष में अभियान इस प्रकार कई कार्य आर्य समाज ने किए थे। यह भी एक ऐतिहासिक सत्य है कि जो कुछ आर्य समाज ने किया था उसके कारण ही देश में जागृति आई और हमारा देश स्वतंत्र हुआ।

आज उनके निर्वाण दिवस पर बड़े गहन आत्म चिन्तन का अवसर है। आर्य समाज ऋषिवर के सिद्धान्तों, आदर्शों और विचारों को प्रसारित करने में कहां तक सफल हुआ है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आर्य समाज का प्रचार जनसाधारण तक बढ़ने नहीं पाया। आर्य समाज के पास दूसरे सम्प्रदायों की भांति कोई ऐसा खिलौना नहीं है जो लोगों को मनोरंजन के लिए दे सके। आर्य समाज के नियमों पर चलना तो तेज तलवार की धार पर चलने के समान है। आर्य समाज के पास उस पुण्यात्मा का दिया हुआ कोई गुप्त मन्त्र नहीं जो दूसरों को कोई चमत्कार दिखाने का प्रयास कर सके। दिव्यात्मा दयानन्द ने तो आर्य समाज को एक खुली पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया है। आर्य समाज का मार्गदर्शन स्पष्ट है। किसी को भ्रमित नहीं करता। धर्म का उपदेश तो सब देते हैं। परन्तु संसार का कोई भी समुदाय आर्य समाज के दस नियमों के अतिरिक्त कोई नियम बताये जो आर्य समाज के घेरे में न आता हो। ऋषि दयानन्द का भक्त अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहता, वह तो संसार का उपकार करना अपना कर्त्तव्य समझता है। वह तो केवल एक निराकार ईश्वर की उपासना करता है।

दीपावली की रात को हम फिर दीये जलाएंगे। दीपावली से जो प्रकाश होता है वह बहुत थोड़े समय के लिए होता है और फिर वे सब दीये बुझ जाते हैं और उसके साथ ही अंधेरा हो जाता है। परन्तु महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के रूप में जो दीपक जलाया है उस दीपक ने संसार को नई दिशा दी। अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी। वेद ज्ञान की ज्योति के प्रकाश से सारे संसार को आलोकित किया। महर्षि के आने से पूर्व लोग अंधकार में ठोकरें खा रहे थे, अंधविश्वासों में फंसे हुए थे। महर्षि ने लोगों को अंधविश्वासों से छुडाया और परमात्मा की भक्ति का रास्ता बताया। उन्होंने वेदों उदाहरण देते हुए बताया कि परमात्मा एक है उसी की उपासना करनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द यदि भारत में न आते तो वेदों के बारे में व परमात्मा के बारे में जो भ्रांतियां फैली हुई थी वह कभी दूर नहीं हो सकती थी। वेदों तक पहुंच न होने के कारण महात्मा बुद्ध जैसे तपस्वी ने वेद पढ़े बिना ही लोगों के कहने पर यह मान लिया कि वेदों में हिंसा है और कहा कि जिन वेदों में जीव हत्या की बात लिखी है मैं ऐसे वेदों को नहीं मानता। अज्ञानता के कारण वेदों के मनमाने अर्थ किए गए। महर्षि ने वेद मन्त्रों के अर्थ करके यह बताया कि वेदों में कहीं भी किसी भी जीव की हिंसा नहीं है। वेद तो अहिंसा का सन्देश दे रहे हैं और एक परमात्मा की उपासना सिखाते हैं। जो परमात्मा सर्वव्यापक है, सर्वान्तर्यामी है, सर्वज्ञ है, निराकार है, सर्वशक्तिमान है, अनादि है, अनन्त है और निर्विकार है उसी की उपासना करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द जी ने वेदज्ञान के द्वारा लोगों को सन्मार्ग दिखाया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

महान समाज सुधारक-महर्षि दयानन्द

ले०—श्री सुधीर शर्मा, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

दीपावली के पावन पर्व की बेला में ही महर्षि दयानन्द का इहलोक से परलोकागमन हुआ था। उनका आगमन सूर्योदय की भांति था। उनका इस संसार से जाना सूर्यास्त सा सिद्ध हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी भारत के लिए अमावस्या की तरह आई। चारों ओर अन्धकार था, परतन्त्रता में देश जकड़ा हुआ था। अशान्ति, अराजकता एवं आतंक का साम्राज्य था। शिक्षा लुप्त थी, पाखण्ड और अन्धविश्वास से प्रत्येक मनुष्य को जकड़ रखा था। सूर्योदय पर प्रकाश की रश्मियां अन्धकार को बिंध देती हैं। अन्धकार धीमे-धीमे लुप्त हो जाता है और सारा वातावरण प्रकाशमय हो जाता है। महर्षि दयानन्द के भारत के मंच पर प्रकट होने पर भी ऐसा ही हुआ। उन्होंने पाखण्ड खण्ड़िनी पताका फहराई, पाखण्ड व अन्धविश्वास के विरूद्ध उन्होंने बिगुल बजाया। देश की भोली-भाली अशिक्षित जनता का उन्होंने पथ प्रदर्शन किया।

महर्षि दयानन्द एक अच्छे चिकित्सक थे। उन्होंने देश के रोग का निदान किया। उन्होंने पाया कि देश का जन साधारण अच्छा है, सरल प्रकृति का है भोला-भाला है , केवल मार्ग से भटक गया है। महर्षि दयानन्द ने देखा कि वह मनुष्यत्व खो बैठा है। मनुष्य के सभी आवश्यक गुण उसे छोड़ बैठे हैं। इन गुणों को देशवासियों में पुन: स्थापित करने पर ही देश का कल्याण हो सकता है। यह उनकी धारणा थी और इन गुणों को धारण करने के लिए महर्षि ने प्रयास किया और इस प्रयास में उन्होंने अपने प्राण भी उत्सर्ग कर दिए। महर्षि दयानन्द ने देखा कि भारतीय अपना स्वाभिमान खो बैठे हैं, अपनी संस्कृति की उपेक्षा करने लगे हैं और उनका आकर्षण पाश्चात्य संस्कृति की ओर हो रहा है। अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलकर लोग अपने स्वाभिमान को खो बैठे थे।

महर्षि ने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया था। वे संस्कृत भाषा के साहित्य से विशेष प्रभावित थे। संस्कृत साहित्य की बहुमूल्यता का उन्हें आभास था। महर्षि दयानन्द की आर्ष ग्रन्थों में आस्था थी। उनका विश्वास था कि वैदिक संस्कृति सबसे प्राचीन संस्कृति है, सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है और उस संस्कृति का आधार सब सत्य विद्याओं की पुस्तक वेद है। महर्षि दयानन्द जी ने नारा दिया था कि प्राचीन संस्कृति की ओर चलो, वेदों से मार्गदर्शन लो। महर्षि दयानन्द की तीव्र इच्छा थी कि लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता से प्यार करें, अपने आर्ष साहित्य से प्यार करें, अपनी मातृभूमि के प्रति उन्हें लगाव हो और उसकी रक्षा के लिए वे अपना तन-मन और धन न्योछावर कर दें। स्वाभिमान पुन: जागृत करने का इससे सुन्दर उदाहरण और क्या हो सकता है। इस बात को हम कैसे भूल सकते हैं कि महर्षि दयानन्द ने महात्मा गांधी के आविर्भाव से बहुत पहले ही स्वदेशी के अभियान की शुरूआत कर दी थी।

महर्षि दयानन्द ने यह भी देखा कि नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन हो गया है। हमारे जीवन में सत्य का स्थान असत्य ने ले लिया है, प्रेम का स्थान घृणा ने, मित्रता के स्थान पर द्वेष, कलह ने आधिपत्य जमा लिया है। लोग विश्वास का उत्तर विश्वासघात से देने लगे हैं। महर्षि दयानन्द जी को यह देखकर अत्यन्त दुख हुआ कि भारत का निवासी कृतघ्न भी हो गया है, अपने भगवान को भुलाकर वह नास्तिक बन गया है। निराकारी सर्वव्यापक परमात्मा के स्थान पर वह पत्थरों की पूजा करने में संलग्न है। अपने देश में अवतारों की होड़ सी लग गई थी। रोज कोई नया ठेकेदार जन्म लेता था और अपनी दुकान खोलकर बैठ जाता था। महन्त और मठाधीश सार्वजनिक जन जीवन में इस तरह छा गए थे कि सामान्य जन का मनन और चिन्तन कुण्ठित हो गया था। मनुष्य की इतनी दुर्दशा पहले कभी नहीं हुई थी। नारी शिक्षा का समूल नाश हो गया था। अनेक प्रकार की बुराईयों से हमारा देश इस तरह जकड़ा हुआ था कि महर्षि दयानन्द को यह सब देखकर अत्यन्त वेदना हुई। महर्षि ने नैतिक मूल्यों के पुर्नस्थापन का पूर्ण प्रयास किया। भोली भाली गरीब अनपढ जनता को नीति के साधारण सिद्धान्त सिखाए। सत्य बोलना सिखाया, सत्याचरण सिखाया, सदाचार सिखाया और ऐसा भी समय आया जबकि महर्षि दयानन्द का शिष्य झूठ नहीं बोल सकता है, गलत काम नहीं कर सकता है, उस पर भरोसा किया जा सकता है। ऐसी धारणा बन गई थी। यहाँ तक कि अंग्रेजों की अदालतों में भी उसकी गवाही नि:संकोच मानी जाती थी।

महर्षि को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक नया विचार मनुष्य के मानस में प्रविष्ट कर गया है, यह विकार था असमानता

(शेष पृष्ठ 6 पर)

दीपावली पर्व का महत्व

लेο—श्री अशोक पुरूथी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

दीपावली का पर्व हिन्दु समाज के लिए बहुत महत्त्व रखता है। लोग महीनों पहले इस त्यौहार की तैयारियां शुरू कर देते हैं। जितना उमंग और उत्साह इस पर्व में देखने को मिलता है उतना उत्साह अन्य त्यौहारों में कम ही देखने को मिलता है। इस अवसर पर लोग अपने- अपने घरों में दीपक जलाकर प्रकाश करते हैं और अन्धकार को दूर करने का प्रयास करते हैं। हिन्दु समाज में दीवाली के पर्व में विषय में एक धारणा यह भी फैली हुई है कि इस दिन मर्यादा पुरूषोत्तम राम लंका से अयोध्या वापिस आए थे और इस खुशी में घी के दीपक जलाए गए थे। परन्तु ऐतिहासिक प्रमाणों से यह सिद्ध नहीं होता है। दीपावली का पर्व जिसे शारदीय नवसस्येष्टि के रूप में मनाया जाता था। लोग अपने घरों में नई फसल के आने पर खुशियां मनाते थे और उसे भगवान का प्रसाद समझकर पहले यज्ञ करके उसकी आहुति देते थे। इसीलिए इस पर्व को शारदीय नवसस्येष्टि के रूप में मनाया जाता था। समय के साथ-साथ परिवर्तन हुआ और हम पर्व के शुद्ध स्वरूप को भूलकर केवल दीपक जलाने तक सीमित रह गए।

इस दीपमाला की रात्रि का महत्त्व एक महाघटना ने और भी बढ़ा दिया। इसी रात्रि को वेदों का उद्धार करने वाले, आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने अपने नश्वर शरीर का त्याग करके इहलोक से प्रयाण किया था। महापुरूषों का देहावसान साधारण मनुष्यों की मृत्यु के समान शोकजनक और रूलाने वाला नहीं होता। उनका तो प्रादुर्भाव और महाप्रयाण दोनों ही लोककल्याण और आनन्द प्रदान करने के लिए होते हैं। वे परोपकार के लिए प्राणों को अर्पण करते हैं। संसार के सुख के लिए अपने प्राणों की बलि देते हैं। इसलिए जनता उनके बलिदान पर उनकी कीर्ति का कीर्तन और गुणगान करके एक प्रकार का आनन्द अनुभव करती है। उनका बलिदान स्वयं जनता के लिए परोपकारार्थ का उत्तम आदर्श स्थापित करके जनता को उसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके समस्त मानव जाति का जो उपकार किया है, महर्षि के उस ऋण को नहीं चुकाया जा सकता। जितना सन्मार्ग महर्षि दयानन्द ने दिखाया है, जितना कुरीतियों के खिलाफ महर्षि दयानन्द ने आवाज उठाई है, नारी जाति के लिए जितना संघर्ष महर्षि दयानन्द ने किया है उतना किसी अन्य महापुरूष ने नहीं किया। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक क्षेत्र में पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास के ऊपर जमकर प्रहार किया। राजनैतिक क्षेत्र में उन्होंने स्वराज्य प्राप्ति पर जोर दिया। सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने नारी जाति के उद्धार,विधवाओं की दुर्दशा को सुधारने और बाल विवाह जैसी कुरीतियों को दूर करने पर बल दिया।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर हम अपने- अपने क्षेत्रों में आर्य समाज के प्रचार की योजनाएं बनाएं। जब हमारे सामने कोई लक्ष्य होगा तभी हम उसे पूरा करने के लिए प्रयास कर सकते हैं। हम इस अवसर पर प्रचार की योजना बनाएं जिससे महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का घर-घर में प्रचार हो। उस योजना को क्रियान्वित करने के लिए हम सभी संगच्छध्वं, संवदध्वं की भावना को धारण करें। कोई भी कार्य तभी सफल हो सकता है जब उस कार्य को करने वाले संगठित हों। उनके विचारों में समानता हो।

आर्य समाज के नियमों को बनाते समय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज का जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसे पूरा करने के लिए संगठित होने की आवश्यकता है। उन्होंने अपने राष्ट्र का नहीं, आर्य समाज का नहीं अपितु संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य बताया ताकि हम अपने उद्देश्य से भटक न जाएं। महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हम लोगों को आर्य समाज के बारे में जानकारी दें। आर्य समाज के बारे में आम जनता में जो भ्रान्तियां फैल चुकी हैं, उन्हें दूर करने के लिए उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों से अवगत कराएं। आर्य समाज की स्थापना के पीछे महर्षि दयानन्द जी का यही उद्देश्य था कि समाज में धर्म के नाम पर जो आडम्बर दिखाई दे रहा है, मूर्ति पूजा के कारण जो अन्धविश्वास फैल रहा है, सम्प्रदायवाद के कारण जो लड़ाई झगड़े हो रहे हैं, उन्हें दूर किया जा सके। सत्य सनातन वैदिक धर्म को अपनाकर सभी लोग संगठित होकर विदेशियों की दासता से मुक्त हों। महर्षि दयानन्द किसी नए पन्थ की मत की स्थापना नहीं करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश

(शेष पृष्ठ 6 पर)

दीप से दीप जलाते चलो

ले०—श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

लाखों वर्षों से हमारे देश में दीपावली मनाई जा रही है। हर वर्ष इस अवसर पर हम लोग अपने भवनों को दीपों से जगमगाते हैं। पहले ये दीपक मिट्टी के बने होते थे, अब इनका स्थान मोमबत्तियां और बिजली के बल्वों ने ले लिया है। मिट्टी के दीपक हों, मोमबत्तियां हों या बिजली के बल्व, ये अपना प्रकाश बाँटते-बाँटते कुछ काल पश्चात स्वयं मिट जाते हैं और इनके मिटने के साथ ही इनका प्रकाश भी अंधकार में विलीन हो जाता है।

किन्तु कुछ दीपक ऐसे भी होते हैं जिनका प्रकाश युग-युग तक मानव मात्र के मन को आलोकित करता रहता है। एक ऐसा दीपक लाखों वर्ष पूर्व इस धरती पर अवतरित हुआ था। इसका नाम सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र था। इस दीपक ने लोक कल्याण और सत्य की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व होम कर दिया। यहां तक कि अपना सर्वस्व राज-पाठ एवं वैभव लुटाकर जब तक एक-एक दाने का मोहताज हो गया और अपने मृत पुत्र का श्मशान में दाह संस्कार करने के लिए इसके पास फूटी कौड़ी तक न रही तो इसने श्मशान घाट में डोम की नौकरी कर ली और तब से यह दीपक स्वार्थ के अन्धकार में भटक रही मानवता को परोपकार एवं सत्य मार्ग पर चलते रहने की प्रेरणा देता चला आ रहा है।

लाखों वर्षों पूर्व मानव समाज को नारी का सम्मान, माता-पिता की आज्ञा का अनुसरण, स्वार्थ-त्याग, भ्रातृ-प्रेम, विद्वानों एवं वृद्ध जनों के सत्कार दुष्टों के संहार एवं पीड़ितों के उद्धार के लिए अपने जीवन के समस्त स्नेह का दान करने वाला एक और दीपक इस धरती पर आया था जिसे संसार मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम के नाम से आज भी याद करता है। श्रीराम द्वारा स्थापित मर्यादाओं के पुनीत एवं भव्य प्रकाश से मानव जगत आज भी प्रकाशित हो रहा है।

हजारों वर्ष पूर्व एक और दीपक योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी के रूप में इस संसार में आया। यह दीपक उस अन्धकारमय युग में जगमगाया जब चहुं ओर दुराचार, अनाचार, भ्रष्टाचार का बोल-बाला था। क्या वृद्धजन, क्या गुरूजन, क्या ब्राह्मण, क्या क्षत्रिय, क्या वैश्य, क्या शूद्र, क्या राजा और क्या प्रजा सभी स्वार्थ, ईर्ष्या, दम्भ, दुराचार और वैमनस्य के अन्धकार में भटकते हुए मानवता को कलंकित कर रहे थे। सत्य सनातन धर्म की ग्लानि हो रही थी। पापी फल-फूल रहे थे और पुण्यात्मा तिरस्कृत हो रहे थे। भाई-भाई का दुश्मन और बाप-बेटे का शत्रु बन गया था। इस घोर अन्धकार में योगीराज श्रीकृष्ण रूपी दीपक ने भगवद् गीता के माध्यम से जिस प्रकाश पुञ्ज को स्थापित किया उसकी अलौकिक प्रतिभा से आज भी संसार जगमगा रहा है और जब तक संसार रहेगा यह प्रकाश इसी प्रकार मानवता का पथ-प्रदर्शन करता रहेगा।

योगीराज श्रीकृष्ण के बाद जिन दीपकों ने अन्धकार में भटक रही मानवता को अपने अलौकिक प्रकाश से आलोकित किया, वे थे महात्मा बुद्ध, महावीर एवं शंकराचार्य। इनके बाद हमारे देश में उस अन्धकाररूपी दानव का पदार्पण हुआ जो अपनी संस्कृति तलवार के बल पर हम पर लादना चाहता था। यह थी मुस्लिम संस्कृति। इस संस्कृति का भारतीय संस्कृति के साथ कोई मेल नहीं था। मुस्लिम संस्कृति नारी को मात्र उपभोग की वस्तु मानती थी। हमारी संस्कृति नारी को पूज्या मानती थी। हम मानव मात्र को, चाहे चाहे वह किसी भी विचारधारा को मानता हो, मित्रवत् आदर देते थे। इसके विपरीत मुसलमान हमलावर इस्लाम मत और हजरत मुहम्मद पर ईमान न लाने वाले को काफिर कह कर तलवार के घाट उतारने पर विश्वास करते थे। मुसलमान हमलावरों ने हजारों लाखों भारतीय नर-नारियों को तलवार के बल पर इस्लाम के बाडे में ठूंसना शुरू कर दिया और जिस-जिस ने उन का प्रतिकार करने का साहस किया उसकी गर्दन उडा दी। भारतीय संस्कृति का प्रकाशपुञ्ज आलोकित करने वाले हजारों ग्रन्थों की होली जला दी। मन्दिरों को तोड़कर उनके स्थान पर मस्जिदें खड़ी की जाने लगी। जन-जन को अपने दूध का अमृत पिलाने वाली गौ माता का कत्ल किया जाने लगा जिन्हें हिन्दु समाज माता के समान पूजा करता था।

मुसलमानों के पश्चात हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम हो गया जिसने हमारी संस्कृति, सभ्यता और शिक्षा के उन्नत ढाँचे को तहस-नहस कर दिया। हमारे धार्मिक ग्रन्थों में मिलावट की जाने लगी, हमारे गौरवशाली इतिहास को विकृत किया गया। जिस देश में सारे संसार के लोग अध्यात्म की शिक्षा लेने के लिए आते थे, शान्ति प्राप्त करने के लिए आते थे। जिसे गुरूओं का देश कहा

(शेष पृष्ठ 16 पर)

पृष्ठ 1 का शेष-महर्षि दयानन्द का निर्वाण.....

दिवस और ऋषि बोधोत्सव तो हर वर्ष आते रहेंगे परन्तु हमें विचार करना है कि हम कहां पर खड़े हैं, महर्षि दयानन्द के उद्देश्य का पूरा करने के लिए हम कहां तक प्रयास कर रहें हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए आर्य समाज के छठे नियम में लिखा कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। हमें इस बात पर विचार करना होगा कि हम कहां तक ऋषि के मिशन को आगे बढाने के लिए कार्य कर रहे हैं। आओ उनके निर्वाण दिवस पर एक बार फिर संकल्प करें कि उस ऋण को चुकाने के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा एक होकर महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार एवं प्रसार करेंगे। अगर राष्ट्रहित के लक्ष्य को सामने रखकर हम आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करते हैं तो यही महर्षि के चरणों में हमारी सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

पृष्ठ 3 का शेष-महान-समाज सुधारक .....

के दृष्टिकोण का। ईश्वर की सृष्टि में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं पाया जाता है। ईश्वर की दृष्टि में सब मानव एक से हैं। सबके लिए एक प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। जल, वायु, सूर्य का प्रकाश सभी के लिए है। कोई पक्षपात नहीं परन्तु न जाने मनुष्य ने कहां से भेदभाव सीख लिया। पुरूष अपने आपको नारी की अपेक्षा श्रेष्ठ समझने लगा। नारी के जीवन पर प्रतिबन्ध लगाए जाने लगे। जातियों को कर्म ने बनाया था परन्तु ये जातियां जन्मजात बन गई थी। इस प्रकार ऊँचनीच की भावना ने जन्म लिया। समाज का एक वर्ग अपने आपको दूसरों से श्रेष्ठ समझता था। शूद्रों के ऊपर अत्याचार किए जाते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इन सब का विरोध करते हुए नारी के लिए शिक्षा का द्वार खोल दिया और शूद्रों के साथ होने वाले भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती एक महान समाज सुधारक थे। उनका प्रत्येक कार्य राष्ट्रहित के लिए था। इसलिए महर्षि दयानन्द जी के जीवन प्रेरणा लेकर समाज में जो कुरीतियां, पाखण्ड़ फैल रहे हैं, उन्हें दूर करने का संकल्प लें। जिन लोगों ने धर्म को अपना व्यवसाय बनाया है, धर्म की आड़ में अनैतिक कार्य करते हैं, भोली-भाली जनता को गुमराह करते हैं, ऐसे लोगों के खिलाफ अभियान चलाकर महर्षि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ा सकते हैं। यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी यदि हम उनके बताए गए पदचिह्नों पर चलते हुए समाज के सुधार के लिए कार्य करेंगे।

पृष्ठ 2 का शेष-दीवाली पर्व एवं महर्षि.....

दीपावली का यह पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हम जितना प्रयास बाहर के अन्धकार को मिटाने के लिए करते हैं, उतना ही प्रयास अपने अन्दर के अज्ञानरूपपी अन्धकार को दूर करने के लिए करें। भौतिक प्रकाश के अभाव में मनुष्य का जीवन चल सकता है परन्तु मनुष्य के अन्दर जो अज्ञानरूपी अन्धकार भरा हुआ है, उस अन्धकार से उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। इसीलिए दीपावली का महान पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हम महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग पर चलते हुए उनके उद्देश्य को पूर्ण करने का प्रयास करें। महर्षि दयानन्द ने जो वेदज्ञान की ज्योति जलाई है उस ज्योति को हम कभी बुझने न दें। अगर हम उनके द्वारा बनाए गए आर्य समाज के नियमों पर चलते हैं और आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करते हैं तो यही हमारी उस महान ऋषि के प्रति श्रद्धांजलि होगी।

पृष्ठ 4 का शेष-दीपावली पर्व का महत्व .....

में लिखते हैं कि- मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूं जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आय्यावर्त्त में प्रचरित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्य्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उस का स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उन का त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूं क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है।

पवित्र विचारों के उद्घोषक, तथा प्राणिमात्र का हित चाहने वाले, सारे संसार का भला चाहने वाले, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द जी का निर्वाण दिवस मनाते हुए हमारा लक्ष्य उनके सिद्धान्तों का प्रचार- प्रसार होना चाहिए। आम जनता में महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की विचारधारा को प्रचारित करें। वेदों को, सत्यार्थ प्रकाश को तथा महर्षि दयानन्द जी के अन्य ग्रन्थों को पढने की प्रेरणा दें। लोगों में वैदिक साहित्य बांटकर उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों से अवगत कराएं। दीपावली के महान पर्व पर महर्षि दयानन्द रूपी ज्ञान का प्रकाश देने वाला दीपक भले ही बुझ गया था परन्तु अपनी अलौकिक प्रतिभा एवं ज्ञान से लाखों दीपक प्रज्जवलित कर गया था। ऐसे महामानव को श्रद्धांजलि देते हुए उनके मानवता के पथ प्रदर्शक कार्यों को अपने जीवन में अपनाएं। यही हमारी उस महामानव के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जीवन का अन्तिम दृश्य

ले०—इन्द्र विद्यावाचस्पति

''जीवन का अन्तिम दृश्य'' नामक यह कथानक आर्य जगत् के उच्च कोटि के इतिहास लेखक ''स्व. श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति'' द्वारा लिखित ''महर्षि दयानन्द'' नामक पुस्तक से लिया गया है। इस कथानक में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अन्तिम दृश्य का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

उदयपुर में स्वामी जी 1883 ईस्वी के फरवरी मास के अन्त तक रहे। मार्च के प्रारम्भ में आप शाहपुरा रियासत की राजधानी में पहुँच गये। शाहपुराधीश राजा नाहरसिंह जी स्वामी जी के भक्तों में से थे। उन्होंने बड़े भक्ति-भाव से स्वागत किया। अपने विशेष बाग नाहर-निवास में स्वामी जी का आसन जमाया। प्रतिदिन वैदिक धर्म का प्रचार होने लगा। महाराज स्वयं प्रतिदिन सायंकाल 3 घण्टे के लिए शिष्य-भाव से आते थे, और अध्ययन करते थे। मनुस्मृति, योग दर्शन, वैशेषिक दर्शन आदि के आवश्यक भागों का महाराज ने पाठ समाप्त कर लिया।

स्वामी जी के उपदेशों से प्रेरित होकर महाराज ने महलों में एक यज्ञशाला बनवाई, जिसमें प्रतिदिन हवन कराने का संकल्प किया। मई मास के मध्य तक शाहपुरा में धर्मवृष्टि करके ऋषि 17 मई 1883 को जोधपुर की ओर रवाना हुए। शाहपुरा से जोधपुर की ओर रवाना होने के समय महाराजा नाहर सिंह ने स्वामी जी से कहा कि ''महाराज! आप जोधपुर तो जाते हैं, परन्तु वहाँ वेश्या आदि का खण्डन न करना।'' ऋषि ने उत्तर दिया कि ''राजन्! मैं बड़े वृक्ष को नहेरने से नहीं काटता, उसके लिए बड़े शस्त्र की आवश्यकता होगी।''

जोधपुर में कर्नल सर प्रताप सिंह और रा. रा. तेजसिंह आदि रईस ऋषि के शिष्य हो चुके थे। वे लोग देर से निमन्त्रण भेज रहे थे। अब समय पाकर ऋषि ने जोधपुर राज्य में भी सुधार का बीड़ा उठाने का संकल्प किया। शाहपुरा से आप अजमेर आये और वहाँ से जोधपुर के लिए रवाना हुए। अजमेर के आर्य-पुरुषों ने ऋषि की सेवा में उपस्थित होकर फिर निवेदन किया कि ''अब आप मारवाड़ प्रान्त में पधारते हैं। वहाँ के मनुष्य प्रायः गँवार और उजड्ड हैं, और उनका स्वभाव और बर्ताव भी अच्छा नहीं। इसलिए अभी आप वहाँ न जाइए।'' ऋषि ने उत्तर दिया कि ''यदि लोग मेरी अँगुलियों की बत्तियाँ बनाकर जलावें, तब भी मुझे कुछ शंका नहीं हो सकती। मैं वहाँ जाऊँगा और अवश्य वैदिक धर्म का प्रचार करूँगा।''

इस उत्तर को सुनकर सब चुप हो गए, परन्तु एक सज्जन ने निवेदन किया कि ''तथापि आप वहाँ सोच-समझकर और मधुरता से काम लेना, कारण यह है कि वहाँ के रहने वाले कठोर हृदय और कपटी होते हैं।'' इसका उत्तर ऋषि ने दिया कि ''मैं पाप के बड़े-बड़े वृक्षों की जड़ काटने के लिए तीक्ष्ण कुठारों से काम लूँगा, न कि उन्हें बढ़ाने के लिए कैंचियों से उनकी कलम करूँगा।''

जोधपुर में स्वामी जी का भली प्रकार स्वागत हुआ। राजा जवानसिंह जी ने आवभगत की। बाद में महाराजा प्रताप सिंह और रा. रा. तेजसिंह आदि रईसों ने दर्शन किये और आतिथ्य का उचित प्रबन्ध किया। कुछ दिनों पीछे स्वयं जोधपुराधीश महाराज यशवन्त सिंह भी दर्शनों को आये। ऋषि ने उन्हें बहुत उपदेश दिया। प्रतिदिन सायंकाल को स्वामी जी सर्व-साधारण को धर्मोपदेश करते और फिर दो घण्टे तक राजभवन में जाकर महाराज तथा उनके अन्य समीपवर्तियों की शंकाओं का निवारण करते। महाराज प्रतिदिन ऋषि से कुछ-न-कुछ सीखते थे। ऋषि ने अपने व्याख्यानों में मूर्तिपूजा, वेश्यागमन, चक्रांकित सम्प्रदाय और इस्लाम का बड़े जोर से खण्डन किया। जोधपुर में यही शक्तियाँ थीं। जोधपुर के पुजारी बड़े प्रचण्ड थे। महाराज और रईसों पर वेश्याओं का पूरा अधिकार था। रियासत में चक्रांकितों का बड़ा जोर था और राज्य के मुसाहिब आला भय्या फैजुल्ला खाँ इस्लाम के खण्डन से बहुत क्षुब्ध हो गए थे। एक रोज उन्होंने स्वामी जी को यहाँ तक कह दिया कि ''यदि इस समय मुसलमानों का राज्य होता तो आप ऐसे व्याख्यान न दे सकते, और देते तो जीवित नहीं रह सकते थे।'' स्वामी जी ने उसका उत्तर दिया-''अस्तु, कोई बात नहीं है। मैं भी उस समय दो क्षत्रिय राजपूतों को पीठ ठोंक देता तो वे उन लोगों को अच्छी तरह समझ लेते।''

इस प्रकार जोधपुर में स्वामी जी के शत्रुओं की संख्या बढ़

रही थी। इसी प्रकार एक और घटना हो गई, जिसने विरोधियों के बल को बहुत बढ़ा दिया। महाराज यशवन्त सिंह का नन्हींजान नाम की एक वेश्या से गहरा सम्बन्ध था। एक रोज अपने निश्चित नियम के अनुसार स्वामी जी दरबार में पहुँचे। उस समय महाराजा के पास नन्हींजान आई हुई थी। स्वामी जी के आने का समय जानकर महाराजा उसे डोली में रवाना कर रहे थे। डोली उठने से पूर्व ही स्वामी जी को समीप आता देखकर महाराजा घबरा गये और डोली को स्वयं कन्धा लगाकर उठवा दिया। ऋषि ने यह देख लिया। इससे उनका चित्त बहुत ही अधिक क्षुब्ध हुआ। उस दिन अपने उपदेश में ऋषि ने राजधर्म का वर्णन करते हुए बताया कि राजा सिंह के समान हैं और वेश्याएँ कुतियों के समान। राजाओं का सम्बन्ध सिंहनियों से ही उचित है, कुतियों से नहीं। महाराज का सिर लज्जा से झुक गया और उन्होंने अपने सुधार का निश्चय किया। नन्हींजान को जब यह समाचार मिला तो वह जल उठी। उसका क्रोध सीमा को पार कर गया।

29 सितम्बर को रात के समय सोने से पूर्व स्वामी जी ने रोज के नियम से गर्म दूध मँगवाकर पिया। स्वामी जी का रसोईया जगन्नाथ नाम का एक ब्राह्मण था। दूध पीकर स्वामी जी सो गए। थोड़ी देर पीछे पेट में दर्द उठा और जी मचलाने लगा। रात को कई प्रकार वमन हुआ। स्वामी जी ने किसी को सूचना न दी, परन्तु निर्बलता के कारण प्रातः काल देर में उठे और घूमने न जा सके। घर की शुद्धि के लिए आपने हवन की आज्ञा दी। हवन किया गया। स्वामी जी की दशा और अधिक खराब होने लगी। उदर-शूल, पेचिश और वमन का जोर बढ़ने लगा। डॉक्टर सूर्यमल जी स्वामी जी के भक्त थे, पहले उनका इलाज आरम्भ हुआ; परन्तु शीघ्र ही दरबार की ओर से डॉ. अलीमर्दान खाँ को भेजा गया। इलाज बहुत हुआ परन्तु दशा सुधरने की जगह बिगड़ती ही गई। प्रतिदिन दस्तों की संख्या बढ़ने लगी। मुँह, सिर और माथा छालों से भर गये, हिचकी बँध गई और शरीर बहुत ही कृश होने लगा। डॉ. अलीमर्दा खाँ का इलाज उल्टा पड़ रहा था। इस घातक परिवर्तन की तह में डॉक्टर की मूर्खता थी या कोई और गहरा भाव था-यह निश्चयपूर्वक कहने का इतिहास-लेखक को तब तक कोई अधिकार नहीं, जब तक कि किसी एक कल्पना की पुष्टि में कोई एक पुष्ट युक्ति न दी जा सके। हाँ, यह बात अवश्य सन्देहजनक है कि दशा तो बिगड़ रही थी और डॉक्टर साहब यही बताते थे कि दशा अच्छी हो रही है। ऋषि के शरीर में जहर घर कर गया था। डॉक्टरों ने यही सम्मति दी थी कि रोगी को विष दिया गया है। प्रतीत होता है कि कपटियों की प्रेरणा से जगन्नाथ ब्राह्मण ने रात को सोते समय दूध में जहर मिलाकर पिला दिया। कहा जाता है कि पता लगने पर इस आशंका से कि मेरे भक्त उस रसोइये को सताएँ नहीं, दयालु ऋषि ने किराया देकर उसे नेपाल की ओर भाग जाने को कहा था।

इतने कष्ट में भी ऋषि का धैर्य आश्चर्यजनक था। उसे देखकर मित्र और शत्रु दाँतों-तले उँगली दबाते थे। इतना कष्ट और 'आह' तक नहीं धैर्य से रोग को सह रहे थे और पूछने पर केवल यथार्थ दशा बतला देते थे। शरीर छालों से भरा हुआ था, बोलने में असह्य कष्ट होता था, हिलना-डुलना भी कठिन हो रहा था। ऐसी दशा में भी ऋषि के मुँह पर न घबराहट थी और न खिजलाहट। वही गम्भीर चेहरा था और वही शान्त मुद्रा थी। जिन लोगों ने उस दशा में स्वामी दयानन्द को देखा, उन्होंने अनुभव किया कि इस मनुष्य में अवश्य ही कोई दिव्य शक्ति काम कर रही है। उनके हृदयों में यह बात अंकित हो गई कि इस महापुरुष के हृदय में निश्चय से परमात्मा की शक्ति काम कर रही है।

स्वामी जी की बीमारी का वृत्तान्त बहुत दिनों तक छिपा न रहा। अजमेर में समाचार पहुँचते ही आर्य-पुरुष जोधपुर के लिए रवाना हुए और स्वामी जी की दशा देखकर आश्चर्यचकित हो गये। रोग की दशा, इलाज की शिथिलता और सेवा की असुविधा देखकर आर्य पुरुषों ने ऋषि से आग्रह किया कि आप आबू पहाड़ पर चलें। ऋषि ने स्वीकार कर लिया। महाराजा को सूचना मिलने पर पहले तो वे दुःखित हुए, परन्तु फिर स्वामी जी का आग्रह देखकर खिन्न मन से आदरपूर्वक विदाई का प्रबन्ध कर दिया। विदाई के समय स्वयं उपस्थित होकर रास्ते के आराम की भली प्रकार व्यवस्था कर दी। जोधपुर से डोली में स्वामी जी आबू पर्वत पर गये, परन्तु वहाँ भी कोई विशेष आराम दिखाई न दिया। तब स्वामी जी के शिष्य उन्हें अजमेर वापस ले गये। इस यात्रा में उन्हें बहुत शारीरिक कष्ट हुआ, परन्तु अच्छा इलाज करने की और स्वयं सेवा करने की शिष्यों की प्रबल इच्छा में बाधा डालना उन्होंने उचित न समझा। अजमेर में स्वामी जी को एक कोठी में ठहराया गया, और डॉ. लक्ष्मणदास जी का इलाज प्रारम्भ हुआ।

ऋषि का मृत्यु-समय निकट आ रहा था। इलाज और सेवा कुछ परिवर्तन पैदा न कर सके। अन्तिम समय का दृश्य एक दर्शक की लेखनी द्वारा जिन सरल शब्दों में चित्रित किया गया है, हम उससे उत्तम वर्णन नहीं कर सकते, इस कारण उसी को उद्धृत किया है-

"रेल से उतारकर स्वामी जी को पालकी में लिटा लिया गया और सावधानी से उन्हें एक कोठी में ले आये, जो पहले से इस काम के लिए नियत कर रखी थी। उस समय रात के तीन बजे थे। अक्टूबर का अन्त था। लोगों को सर्दी मालूम होती थी, परन्तु स्वामी जी के मुँह से केवल 'गर्मी-गर्मी' का शब्द निकलता था। कोठी के सब दरवाजे खुलवा दिये गये, तब भी स्वामी जी को शान्ति न हुई। दूसरे दिन डॉ. लक्ष्मणदास जी का इलाज शुरू हुआ, पर उनकी दशा में कुछ अन्तर न हुआ। एक बार स्वामी जी ने अपने प्रेमीजनों से कहा, "हमको मसूदा ले चलो!" इस पर सबने कहा कि "आराम होने पर हम आपको वहाँ पहुँचा देंगे, इस दशा में बार-बार यात्रा करना ठीक नहीं हैं।" इस पर स्वामी जी ने कहा कि "दो दिन में हमको पूरा आराम पड़ जायेगा।" यह उत्तर स्मरण रखने योग्य है। अब स्वामी जी के सारे शरीर में छाले-ही-छाले दीखने लगे। 29 अक्टूबर को स्वामी जी का शरीर अत्यन्त ही निर्बल हो गया। आपने सेवकों से कहा कि हमें बिठा दो। जब उन्हें बिठाया गया तो कहा कि "छोड़ दो, हमें सहारे की आवश्यकता नहीं है।" तब वह कितनी देर तक बिना सहारे बैठे रहे। उस समय साँस जल्दी-जल्दी चल रही थी, पर स्वामी जी उसे रोककर बल से फेंक देते थे, और ईश्वर के ध्यान में मग्न हो रहे थे। रात कष्ट अधिक रहा। दूसरे दिन 30 अक्टूबर को डॉक्टर न्यूमन साहब बुलाये गये। जिस समय उक्त डॉक्टर साहब ने स्वामी जी को देखा तो बड़े आश्चर्य से कहने लगे कि "धन्य है इस सत्यपुरुष को! हमने आज तक ऐसा दिल का मजबूत कोई दूसरा मनुष्य नहीं देखा कि जिसको इस प्रकार नख से शिख तक अपार पीड़ा हो और वह तनिक भी आह या ऊह न करे।" उस समय स्वामी जी के कण्ठ में कफ की बड़ी प्रबलता थी, जिसकी निवृत्ति के लिए डॉक्टर न्यूमन ने कई उपाय किये, परन्तु उससे कुछ लाभ न हुआ। 11 बजे दिन के स्वामी जी का श्वास विशेष बढ़ने लगा। उन्होंने कहा कि हम शौच जायेंगे। उस समय स्वामी जी को चार आदमियों ने उठाया, और शौच करने की चौकी पर बिठा दिया। शौच गये और पानी लिया। आज्ञानुसार पलंग पर बिठाया गया। कुछ देर बैठकर फिर लेट गये। श्वास बड़े वेग से चलता था, और ऐसा प्रतीत होता था कि स्वामी जी श्वास को रोककर ईश्वर का ध्यान करते हैं। उस समय स्वामी जी से पूछा गया कि 'महाराज! कहिये, अब आपकी तबीयत कैसी है?' कहने लगे कि 'अच्छी है, एक मास के पीछे आज का दिन आराम का है।'

इस समय लाला जीवनदास जी ने, जो लाहौर से स्वामी जी को देखने अजमेर गये थे, स्वामी जी के अभिमुख होकर पूछा कि 'महाराज! इस समय कहाँ है?' स्वामी जी ने उत्तर दिया कि 'ईश्वरेच्छा में।'

उस समय श्रीयुत के मुख पर किसी प्रकार का शोक या घबराहट प्रतीत नहीं होती थी। ऐसी वीरता के साथ दुःख को सहन करते थे कि मुँह से कभी हाय या शोक नहीं निकला। इसी प्रकार स्वामी जी को बातचीत करते-करते पाँच बज गये, और बड़ी सावधानता से रहे। इस समय हम लोगों ने श्रीयुत से पूछा कि 'कहिये, अब आपकी तबीयत का क्या हाल है?' तो कहने लगे कि 'अच्छा है, तेज और अन्धकार का भाव है।' इस बात को हम कुछ न समझ सके क्योंकि स्वामी जी इस समय सरल बातचीत कर रहे थे। साढ़े चार बजे का समय आया तो हम लोगों से स्वामी जी ने कहा, 'अब सब आर्यजनों को जो हमारे साथ और दूर-दूर देशों से आये हैं, बुला लो और हमारे पीछे खड़ा कर दो। कोई सम्मुख खड़ा न हो।'

बस, आज्ञा पानी थी, वही किया गया।

जब सब लोग स्वामी जी के पास आ गये तब उन्होंने कहा कि चारों ओर के द्वार खोल दो और ऊपर की छत के दो छोटे द्वार भी खुलवा दिये। इस समय पण्ड्या विष्णुलाल मोहनलाल भी श्रीमान उदयपुराधीश की आज्ञानुसार आ गये। फिर स्वामी जी ने पूछा-कौन सा पक्ष, क्या तिथि और क्या वार है? किसी ने उत्तर दिया कि कृष्ण-पक्ष और शुक्ल-पक्ष की सन्धि अमावस मंगलवार है। यह सुनकर कोठी की छत और दीवारों की ओर दृष्टि की, फिर पहले वेद-मन्त्र पढ़े, तत्पश्चात् संस्कृत में ईश्वर की कुछ उपासना की, फिर संस्कृत भाषा में ईश्वर के गुणों का थोड़ा-सा कथन कर बड़ी प्रसन्नता और हर्ष-सहित गायत्री मन्त्र का पाठ करने लगे। तत्पश्चात् हर्ष और प्रफुल्लित चित्त-सहित कुछ देर तक समाधियुक्त नयन खोल कहने लगे कि 'हे दयामय! हे सर्वशक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है। तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो! अहा! तूने अच्छी लीला की।' बस, इतना कह स्वामी जी महाराज ने, जो सीधे लेट रहे थे, स्वयं करवट ली और एक प्रकार से श्वास को रोककर एक बार ही निकाल दिया।"

(आर्यधर्मेन्द्र जीवन)

लेखक के शब्द सरल और अकृत्रिम हैं। ये शब्द बताते हैं कि दर्शकों के हृदयों पर उस तपस्वी की मृत्यु का गहरा असर हुआ था। कहते हैं कि लाहौर से पं. गुरुदत्त विद्यार्थी भी लाला जीवनदास जी के साथ ऋषि के दर्शनों को गए हुए थे। पण्डित गुरुदत्त जी इससे पूर्व अर्ध-नास्तिक थे। विज्ञान के धक्के ने हृदय के ईश्वर-विश्वास को हिला दिया था। ऋषि की मृत्यु के दिव्य

दृश्य को देखकर पण्डित जी के कोमल हृदय पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। एक आस्तिक किस शान्ति से मर सकता है, यह देखकर गुरुदत्त का हृदय पिघल गया और जहाँ नास्तिकता के कारण शून्य हो रहा था वहाँ विश्वास और श्रद्धा का सुगन्धित पवन बहने लगा। जो अविश्वासी हृदय के साथ मरता है, उसे भविष्य में निराशा दिखाई देती है। जिसे ईश्वर पर भरोसा नहीं, उसके लिए मौत एक अथाह अँधेरी खाई है। जिसने जीवन में केवल आस्तिकता का दम्भ भरा हो, मृत्यु के समय उसके मुँह पर से पर्दा उठ जाता है और जो प्रत्यक्ष में सन्तुष्ट दिखाई देता था, वह वस्तुतः अशान्तमय दिखाई देता है। मृत्युकाल सब पर्दों को उखाड़ देता है। उस समय कोई भाव छिपा नहीं रहता। ऋषि की मृत्यु बताती है कि उनका हृदय ईश्वर-विश्वास और धार्मिक श्रद्धा से परिपूर्ण था। उनका जीवन उज्जवल था, परन्तु मृत्यु उससे भी बढ़कर थी-वह दिव्य थी। इस भू-लोक पर ऐसे दृश्य कम दिखाई देते हैं। वह मृत्यु थी, जो नास्तिक हृदय के मरुस्थल में से भी आस्तिकता की सरस्वती बहा सकती थी।

जीवन के समय ऋषि के मित्र भी थे और शत्रु भी थे; परन्तु मृत्यु के उन सब भेदों को दूर कर दिया। देश में मृत्यु का समाचार फैलते ही सार्वजनिक सहानुभूति का एक ऐसा शब्द उठा कि छोटे-छोटे विक्षोभ दूर हो गये। ईसाई, मुसलमान, ब्राह्मो, थियोसॉफी सभी ने एकस्वर से आर्यजाति के नेता की मृत्यु पर दुःख प्रकाशित किया। जीते-जी जो मुँह-संकोचवश मौन रहते थे, वे खुल उठे और भारत के नेताओं और समाचारपत्रों ने दयानन्द की अकाल मृत्यु को देश के दुर्भाग्य का चिह्न समझा। सभी प्रकार के भारत-हितैषी सज्जनों ने ऋषि की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। आर्य समाज को कितना कष्ट हुआ होगा, इसकी तो कल्पना ही की जा सकती है। आर्य समाज का सर्वस्व लुट गया। उसका मूलाधार नष्ट हो गया। समाजें अनाथ हो गईं। उस समय समाजों की जो अनाथ दशा थी, उसकी कल्पना इस समय करना कठिन है। अब तो आर्य प्रतिनिधि सभायें हैं, दर्जनों विद्वान् हैं, पुराने-पुराने विश्वासपात्र नेता हैं और एक के खाली स्थान पर बैठने वाला दूसरा महानुभाव विद्यमान हैं। उस समय आर्य समाज और आर्य समाजियों को एक दयानन्द का भरोसा था। कोई झगड़ा हो तो वह निपटाएँ, शास्त्रार्थ हो तो वही पहुँचें, उत्सव की शोभा उन्हीं से हो, सारांश यह कि समाज का सर्वस्व केवल वही थे। आर्य समाज में जो व्यापी मातम की घटा छा गई, वह यथार्थ ही थी।

आर्य समाज के बाहर समझदार हिन्दुओं ने स्वामी जी के वियोग को किस प्रकार अनुभव किया, उसका दिग्दर्शन पण्डित बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित, प्रयाग के 'हिन्दी प्रदीप' के लम्बे लेख की निम्नलिखित पंक्तियों से हो सकता है। स्वामी जी की मृत्यु का समाचार सुनकर प्रदीप ने लिखा था-"हा! आज भारतोन्नति-कमलिनी का सूर्य अस्त हो गया। हा! वेद का खेद मिटाने वाला सद्वैद्य लुप्त हो गया। हा दयानन्द सरस्वती! आर्यों के सरस्वती-जहाज की पतवार बिना दूसरे को सौंपे तुम क्यों अन्तर्धान हो गये! हा! सच्ची दया के समुद्र! हा! सच्चे आनन्द के वारिद! अपनी विद्यामयी लहरी और हितोपदेश-रूपी धारा से परितप्त भारतभूमि को आर्द्र कर कहाँ चले गये? हा! चार दिन के चतुरानन! इस असभ्यता-प्रिय मण्डली में आपने अपनी विलक्षण चतुराई को क्यों इस प्रकार सरल भाव से फैलाया?" इसी प्रकार लम्बा खेदपूर्ण लेख लिखकर भट्ट जी ने यह प्रकाशित कर दिया कि जो जन आर्य समाज के सभासद् नहीं परन्तु आर्यत्व से प्रेम करते थे, वे दयानन्द को आर्य जाति का नेता समझते थे, संकुचित मत का प्रचारक नहीं।

मुसलमान-दुनिया के विचारों का प्रतिबिम्ब उस समय के भारतीय मुसलमानों के नेता सर सय्यद अहमद खाँ की राय में दिखाई दे सकता है। लाहौर के 'कोहेनूर' में आपने लिखा था-"निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहब ने, जो संस्कृत के बहुत बड़े आलम और वेद के बहुत बड़े मुहिक्कक थे, 30 अक्टूबर 1883 को 7 बजे शाम को अजमेर में इन्तकाल किया। इलावा इलाम-ओ-फजल के निहायत नेक और दरवेशसिफ्त आदमी थे। इनके मुतअक्कद इनको देवता मानते थे, और बेशक वह इसी लायक थे। वह सिर्फ ज्योतिस्वरूप निरंकार के सिवा दूसरे की पूजा जायज नहीं रखते थे। हमसे और स्वामी दयानन्द मरहूम से बहुत मुलाकात थी, वह हमेशा इनका निहायत अदब करते थे। क्योंकि ऐसे आलम और उम्दा शख्स थे कि हर एक मजहब वाले को इनका अदब लाजिम था। बहरहाल ऐसे शख्स थे, जिनका मसल इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है और हर-एक शख्स को उनकी वफात का गम करना लाजिम है, कि ऐसा बेनजीर शख्स इनके दर्मियान से जाता रहा।" इस सम्मति को समझदार मुसलमानों की सम्मति का एक नमूना समझा जा सकता है।

अन्तिम दिनों में स्वामी जी का थियोसॉफिस्टों से बहुत मतभेद हो गया था, परन्तु मृत्यु पर थियोसॉफिकल सोसाइटी के नेताओं ने बड़ी सहृदयता से दुःख का प्रकाश करते हुए आन्तरिक भक्ति का प्रमाण दिया। स्वामी जी की मृत्यु के समाचार पर थियोसॉफी के मुखपत्र 'थियोसॉफिस्ट' ने हृदय के उद्गार

(शेष पृष्ठ 12 पर)

दे सत्यार्थप्रकाश विश्व को शान्त हो गया प्यारा संत

ले०—डा. राजेन्द्र वर्मा

नलिन सदृश खिल रहे नेत्र, मन भी प्रसन्नमुख अति अम्लान।
विमल भाल पर चन्द्र-प्रभाती आभा चमकी शोभावान्।।
सहनशीलता नहीं, सर्वथा तन में यह आत्मिक बल था।
थी प्राणान्तकारिणी पीड़ा पर संन्यासी अविचल था।।

पा प्रत्यक्ष प्रमाण प्रभा से उन्नत चित्त चमक आया।
दयानन्द के देह-दीप की ज्योति दे गई उजियाला:।
पलक-कपाट खोल मुनिवर ने दिव्य-दीप्ति का कर विस्तार,
बोले-"तूने कितनी अच्छी लीला की कृपालु करतार।।"

"सचमुच तेरी इच्छा थी वह पूर्ण हुई है सर्वेश्वर,
शक्तिमान् करुणानिधान् हे परमात्मा, हे परमेश्वर :।"
इन शब्दों का उच्चारण कर परम-धाम को जाने को,
चढ़े स्वर्ग-सोपान सहज ही मुक्ति-मार्ग के पाने को।।

पवन-प्राण को पल भर रोका, प्रणव-नाद से किया विकास,
दिव्यात्मा हो गई वायु में लीन, नहीं था तन में सांस।।
भक्तजनों ने रो-रो कर कमरे की भूमि भिगोई थी।
मानो बहा हृदय के आंसू गीली धरती रोई थी।।

दारुण-दु:ख से उर विदीर्ण था, नया शोक का पारावार।
आंखें फूट-फूट रोने से फूली, घिग्घी बंधी अपार।।
व्याकुलता का वेग शोक-संसार में सबको डाल गया।
भारत-भू का भाग्य भानु था अन्त हुआ, मुनिपाल गया।

सांयकाल बजे थे छह स्वामी जी का निर्वाण हुआ।
स्वर्गारोहण समाचार से आर्य-जगत् निष्प्राण हुआ।।
दुख के शैल-शिखर का सब के मस्तक पर विनिपात हुआ।।
किया करुण-क्रन्दन कितनों ने, मन-कलिका मुरझाई थी।

या दिनकर की प्रथम किरण पर काल कालिमा छाई थी।
शरत्-पूर्णिमा के शशांक पर श्यामा की छाया छाई।

(शेष पृष्ठ 12 पर)

पृष्ठ 12 का शेष-दे सत्याप्रकाश विश्व...

उन्नत उदित बाल रवि पर घनघोर घटा थी आई।।
हरित भरित, पुष्पित, सुफलित उद्यान रूप था आर्य समाज।
कालकूट के लू के झोंके ने झुलसाए थे ऋषिराज।।
शीतल, विमल, सुकोमल, सुरभित, सरस वाटिका मुरझाई।
ऋषि-वियोग की व्यय-व्यथा से दुःख भरी बदली छाई।।
उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम, दशों दिशाओं में था शोक।
ऋषि के असमय देहत्याग से लोप हो गया था आलोक।।
नगर-नगर में शोक छा गया, हुई विश्व को क्षति भारी।
छीन ले गई महापुरुष को महामृत्यु यों हत्यारी।।
गहरी काली रेखा देकर सब पत्रों में था सम्वाद।
दयानन्द आनन्दकन्द का निधन दे गया व्याधि विषाद।।
अक्तूबर था तीस तिरासी सन् जब ऋषि ने छोड़े प्राण।
अस्ताचल की ओट गए थे दीपावली के दिन भगवान्।।
जब वनिताएं दीप थाल ले निज आंचल की ओट किए।
द्वार-द्वार दीपक धरती थीं अन्तर में उल्लास लिए।।
एक जगमगाता दीपक जग का उस समय बुझा, हा हन्त!
दे सत्यार्थप्रकाश विश्व को शान्त हो गया प्यारा सन्त।।

पृष्ठ 10 का शेष-दे सत्याप्रकाश विश्व...

निम्नलिखित शब्दों में प्रकट किये थे-'एक महान् आत्मा भारतवर्ष से चल बसी। पं. दयानन्द सरस्वती जी, जिन्होंने आर्यावर्त में आर्यसमाज की बुनियाद रखी थी और इसके सबसे बड़े रुकन वा मुखिया थे, आज दुनिया से कूच कर गये। वह निडर और सरगर्मी से काम करने वाला रिफॉर्मर, उसकी जबरदस्त आवाज और पुरजोश वक्तृत्व-शक्ति से भारत के हजारों आदमी गत कई वर्षों के समय में प्रमाद और आलस्य के गड़ढ़े से निकलकर देश-भक्ति के झण्डे-तले आ गये थे, आज भारत को वियोग से दुःखी करके स्वर्ग को चला गया।'

थियोसॉफिकल सोसाइटी के संस्थापक कर्नल अल्कॉट ने लिखा था-'स्वामी जी महाराज निःसन्देह एक महान् पुरुष और संस्कृत के बड़े विद्वान् थे। उनमें ऊँचे दर्जे की योग्यता, दृढ़ निश्चय और आत्मिक विश्वास का निवास था। वह मनुष्य-जाति के मार्गदर्शक थे। वह अत्यंत सुडौल, दीर्घाकार, अत्यन्त मधुर-स्वभाव और हमारे साथ व्यवहार में दयाशील थे। हमारे दिमाग पर उन्होंने बड़ा गहरा असर छोड़ा है।'

ईसाई लोगों से स्वामी जी का बहुत खिंचाव रहता था। क्योंकि ईसाइयत की विजय-यात्रा को उत्तरीय भारत में रोकने वाला दयानन्द ही था। मृत्यु पर ईसाइयों की ओर से भी हार्दिक दुःख ही प्रकाशित किया गया। विलायत में समाचार पहुँचा। संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो. मैक्समूलर ने 'पालमाल गजट' में एक लेख लिया। उस लेख में प्रोफेसर महोदय ने स्वीकार किया कि स्वामी जी वैदिक साहित्य के बड़े भारी पण्डित थे और प्रसिद्ध सुधारक थे। प्रोफेसर साहब ने लिखा कि जहाँ कहीं भी शास्त्रार्थ हुआ, स्वामी दयानन्द की विजय हुई। देश के सभी समाचारपत्रों ने ऋषि की मृत्यु को देश का परम दुर्भाग्य बतलाया। इस प्रकार देशभर द्वारा कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किए हुए ऋषि दयानन्द ने दीवाली की रात को अभागी भारत-भूमि को छोड़कर परलोक की यात्रा की।

शारदीय नवसस्येष्टि दीपावली

श्रीमद्दयानन्द निर्वाण : कार्तिक वदि अमावस्या

लेo—पं. श्री भवानी प्रसाद

शारदीय शुभ शस्य सुहाई, अद्भुत सुन्दरता सरसाई।
मुद्ग, माष, तिल, शालि चुलाई, जन-मन भरते मोद-बधाई।
लिपे पुते घर हैं छवि छाये, दीपावली की ज्योति जगमगाये।
नवान्नेष्टि सज्जन करते हैं, शुद्ध गन्ध घर-घर भरते हैं।
थल-थल में रम रही रमा है, सदन सदन सुसमृद्धि सना है।
(श्री सिद्धगोपाल कविरत्न)

आनन्द सुधासार दया का पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।।
"शंकर" दिया बुझाए दिवाली को देह का।
कैवल्य के विशाल वदन में मिला गया।।
(कविवर नाथूराम 'शंकर' कृत)

आज शरद् ऋतु की समाप्ति में केवल पन्द्रह दिन शेष हैं। पन्द्रह दिन पीछे सर्वत्र हेमन्त ऋतु का राज्य होगा और शीत का शासन सबको स्वीकार करना होगा। वर्षा के बीतने और शीत लगने पर जनता को कुछ विशेष समारम्भ (तैयारियां) करने पड़ते हैं। वर्षा ऋतु में वृष्टिबाहुल्य से वायु मण्डल तथा घर बार विकृत, मलिन और दुर्गधिन्त हो जाते हैं। बरसात के अन्त में उनकी संशुद्धि और स्वच्छता की आवश्यकता होती है। वायु मण्डल का संशोधन हवन यज्ञ से होता है और घर बार की स्वच्छता लिपाई पुताई से की जाती है। अब ही भावी शीत निवारण के लिए गरम वस्त्रों का प्रबन्ध करना होता है। इसी समय सावनी की फसल का आगमन होता है। किसान के आनन्द की सीमा नहीं है। उसका घर अन्न धान, माष, मूंग, बाजरा, तिल और कपास से भरपूर होने को है। इस अवसर पर श्रौत स्मार्त सूत्रों में गोभिलगृह्य सूत्र, तृतीय प्रपाठक, सप्तम खण्ड, 7-24, सूत्र, पारस्करगृह्य सूत्र द्वितीय कांड 17वीं कण्डिका, 1-18 सूत्र, आपस्तम्बीय गृह्य सूत्र 19 खण्ड, मानव गृह्य सूत्र तृतीय खण्ड तथा मनुस्मृति के-

सस्यान्ते नवसस्येष्ट्या तयर्वन्ते द्विजोऽध्वरैः।
अध्यायः 4 श्लोक 26।।

इस पद्य में नवसस्येष्टि वा नवान्नेष्टि (नव = नवीन-सस्य = फसल वा खेती-इष्टि = यज्ञ, अर्थात् नवीन फसल के अन्न का यज्ञ) करने का विधान है। इन सब कार्यों के लिए पर्व कार्तिक वदि अमावस्या तिथि को प्राचीन काल से नियत चला आता है उस को दीपावली भी कहते हैं। वैसे तो प्रत्येक अमावस्या को दर्शेष्टि यज्ञ कर्मकांड ग्रन्थों में विहित है, किन्तु कार्तिक अमावस्या को दर्शेष्टि और नवसस्येष्टि दोनों इष्टियों के विधान हैं, क्योंकि उनसे इस अवसर पर वर्षा ऋतु में विकृत वातावरण की विशेष संशुद्धि अभीष्ट हैं। वर्षा के अवसान पर दलदलों के सड़ने मच्छरों के आधिक्य तथा आर्द्रता (नमी) के कारण ऋतु ज्वर (मौसमी मलेरिया बुखार) आदि रोग बहुत फैलते हैं। इसलिए इस ऋतु के शारदीय पूर्णिमा, विजय दशमी और दीपावली इन तीन पत्रों के होम, यज्ञों से उन रोगों का अनागत प्रतिकार भी अभिप्रेत है।

जैसे शारदीय आश्विन पूर्णिमा को चांदनी वर्ष भर की बारह पौर्णमासियों में सर्वोत्कृष्ट होती है, उसी प्रकार कार्तिकीय अमावस्या का अन्धकार वर्ष की बारह अमावस्याओं में सघनतम होता है। इस अमावस्या के अन्धकार पर मृच्छकटिककार शूद्रक कवि की निम्नलिखित उक्ति पूरी उतरती है।

लिम्पतीय तमोऽगांनि, वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।।

अर्थ-अन्धियारी अंगों पर पुत सी गई है, आकाश गाजन सा बरसा रहा है, दृष्टि शक्ति इस प्रकार निष्फल (बेकार) हो गई है, जिस प्रकार असज्जन की सेवा व्यर्थ जाती है।

ऐसी घनी अन्धियारी रात्रि में, नवीन सावनी सस्य के आगमन से प्रमुदित कृषि प्रधान भारत वर्ष में भी वर्ष की प्रथम उक्त सस्य (फसल) के स्वागत के लिए दीपमाला का उत्सव मनाया जाता है। यह दीपमाला भी गृहों की वर्षाकालीन आर्द्रता से उनके संशोधन में सहायक होती है।

आज राज प्रासाद से लेकर रंककुटीर तक की शोभा अपूर्व है। प्रत्येक नगर और ग्राम का प्रत्येक आर्य घर परिमार्जन और सुधा (कली और चूना) वा पिंडोश मृतिका के लेपन से श्वेत रूप धारण किए हुए है। प्रत्येक अट्टालिका, आंगन और कक्षा

(कोठरी) में दीप पंक्ति जगमगा रही है। धनियों के बहुमूल्य कांचमय प्रकाशोपकरणों (झाड़ फानूस आदि शीशे आलाय) से लेकर दीनों के दीवलों (मृण्मय तेल के छोटे-छोटे दीपकों) तक की कृत्रिम ज्योति प्रकृति के प्रगाढ़ान्धकार से स्पर्धा (होड़ी होड़ी) कर रही है। पुरुषोत्तम प्रिया के कृपापात्रों के भवन नाना व्यञ्जनों और विविध मिष्ठानों की सरस सुगन्ध से परिपूर्ण हैं तो लक्ष्मी के कृपाकटाक्ष से वंचित दीनालय धान्य की खीलों से ही सन्तुष्ट हैं। संक्षेपत: आज प्रत्येक आर्य परिवार ने अपने गृह को स्ववित्तानुसार मनोहर बनाने का भरपूर प्रयत्न किया है। इसका कारण यह है कि चिरकाल से प्राय: प्रत्येक आर्य सन्तान के हृदय में यह विश्वास बद्धमूल है कि आज की महारात्रि में महालक्ष्मी (धन की देवी) भ्रमण करने निकलती है और जिस सदन को सबसे सुन्दर पाती है, उसी को वर्ष भर के लिए अपना आवास बना लेती है-उसमें वर्ष भर तक समृद्धि (धन्यधान्य) का वास रहता है। इस विश्वास का मूल स्त्रोत यही होगा कि मानस शास्त्र के तत्ववेता भारतवासी शोभा और समृद्धि तथा दारिद्रय और दीनता के अन्योन्याश्रय वा समवाय-सम्बन्ध से पूर्ण परिचित थे। वे भली प्रकार जानते थे कि शोभनीय स्थानों में ही समृद्धि रहती है, अथवा समृद्धि के स्थान में शोभा स्वयंमेव आन विराजती है। इसके विपरीत दारिद्रय वा मालिन्य में दीनता का वास रहता है वा दीनता की विद्यमानता में दारिद्रय आप ही आ जाता है। वस्तुत: लक्ष्मी देवी शोभा और समृद्धि के कविकल्पित रूपक की ही एक मूर्ति है। आज वर्ष के प्रथम शस्य श्रावणी पर्व के शुभागमन के अवसर पर गृहों को शोभा और समृद्धि के आवास योग्य बनाना स्वाभाविक और समुचित ही था। यही लक्ष्मी की पूजा थी, क्योंकि पूजा का वास्तविक भाव योग्य को योग्य स्थान प्रदान करना ही है। आज नव-शस्य के शुभागमनावसर पर शोभा और समृद्धि को समुचित स्थान और अवसर पर स्थापना ही उसकी वास्तविक पूजा है। किन्तु तत्व के परित्याग और रूढ़ि की आरूढ़ता के युग पौराणिक काल में लक्ष्मी पूजा का यह तत्वांश तत्वदृष्टि से तिरोहित हो गया और उसके स्थान में उल्लूकवाहनी की षोडशोपचार पूजा प्रचलित हो गई उसके वाहन (मूढ़ता के साक्षात् स्वरूप उल्लू महाराज अपनी उपास्य देवी के पदार्पण की प्रतीक्षा में दीवाली को सारी रात जागरण (रतजगा) करते हैं। प्राय: बुद्धिविशारद भक्त शिरोमणि तो निद्रा के अवसरण के लिए रात्रि भर द्यूत कीड़ा में रत रहते हैं मन:कल्पित लक्ष्मी की प्रतीक्षा करते हुए भी साक्षात् लक्ष्मी (धन सम्पत्ति) को वे द्यूत द्वारा दुतकारते हैं-तिरस्कारपूर्वक उस को घर से धक्का देते हैं-''अक्षैर्मा दीव्य, इस अथर्ववेद की कल्याणी वाणी का प्रत्यक्ष प्रतिवाद वा अनादर करते हैं।

आजकल के कलि काल में वैदिक कालीन पर्व शारदीय नवसंस्येष्टि तथा दर्शेष्टि का तो सर्वथा लोप हो गया है और केवल उसके बाह्य गृहपरिशोधन, परिमार्जन, दीपक पंक्ति (दीपावली-दीपमाला) प्रकाशन, मिष्टान्न तथा ताजा वितरण और घोर अविद्यान्धकार काल में प्रचारित द्यूत, दुराचार आदि उसके आनुषंगिक उपचार शेष रह गये हैं। नवान्नेष्टि के चिन्ह होम तक की परिपाटी प्राय: उठ गई है। शायद ही किन्हीं बिरले सौभाग्यशाली गृहों में आज की रात्रि में होम होता होगा। हां, कहीं-2 गुग्गुल की धूप जलाने की रीति अवश्य प्रचलित है जो प्रशंसनीय है।

दीपावली के विषय में भी विजयादशमी के समान यह एक कल्पित कथा चल पड़ी है, कि इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र बनवास से लौट कर अपनी राजधानी अयोध्या में वपिस आए थे और उनकी प्रजा ने उस हर्षोत्सव के उपलक्ष्य में आज दीपावली की थी। उसका अनुकरण वर्तमान दीपावली चली आती है। विजयदशमी के विवरण में इस प्रसंग के उल्लिखित ऊहापौह से भले प्रकार प्रकट होता है कि यह विचार भी सर्वथा कपोलकल्पित है, क्योंकि श्रीराम रावणवध और लंका विजयान्तर के तत्काल ही अयोध्या लौट आये थे। और जब उक्त विवेचनानुसार रावणवध फाल्गुण वा वैशाख में हुआ था तो श्री रामचन्द्र जी का अयोध्याप्रत्यागमन कार्तिक मास में किस प्रकार सम्भव है। प्रतीत होता है कि दीपावली की दीपमाला में प्रकाश से श्री रामचन्द्र के अयोध्याप्रत्यागमन के हर्षोत्सव की कल्पना कुञ्ज मस्तिष्क में हुई हो और उसी से यह दन्तकथा सर्वसाधारण में प्रचलित हो गई हो। वैदिक धर्मावलम्बी आर्य सामाजिक महाशयों का परम कर्त्तव्य है कि जहां वे इस प्रकार के ऐतिहासिक तत्व को शिरोधार्य कर कपोलकल्पनाओं का निरसन करें। वहां शारदीय नव-सस्येष्टि के वैदिक पर्व का प्रत्यावर्तन करके , उसके गृह संशोधन और दीपावली प्रकाशन आदि अनुषंगों के सहित आगे पद्धति प्रदर्शित प्रकारानुसार उसके स्वरूप का आर्य जनता में प्रचार करें।

जैसा कि पर्वप्रादुर्भाव परिचय के प्रकरण में विवेचना की गई है, आर्यों का एक-एक पर्व किसी विशेष कृत्य के लिए उद्दिष्ट है और इस प्रकार उसका सम्बन्ध किसी न किसी एक विशेष वर्ग के साथ स्थापित है। जिस प्रकार वैदिक धर्म की चातुर्वर्ण्य और चतुराश्रम व्यवस्था चराचर जगत् में व्याप्त है,

उसकी व्याप्ति केवल मनुष्यमात्र में ही नहीं है, प्रत्युत तिर्यग्योनियों और उद्भिजों में भी गुणकर्मानुसार वर्ण और आश्रम विद्यमान हैं-पशुओं में गौ और वनस्पतियों में अश्वत्थ (पीपल) ब्राह्मण वर्ग के अन्तर्गत है। इस विषय का यहां अधिकार विस्तार, प्रकरणान्तर प्रवेश का दोषावह होगा-इसलिए संकेतमात्र इतना ही पर्याप्त है-इसी प्रकार आर्यों के पर्वों में भी चातुर्वर्ण्य व्यवस्था पाई जाती है। श्रावणी उपाकर्म, स्वाध्याय से सम्बन्ध होने के कारण, ब्राह्मण पर्व है लोक में भी श्रावणी (सलूनी) ब्राह्मण का पर्व कहलाती है। विजयादशमी क्षत्रियों का दिग्विजय यत्रा और क्षात्रधर्म के विकास से सम्बन्ध रखने के कारण क्षत्रिय पर्व कहते हैं, शारदीय नवसस्येष्टि वा दीवाली के पर्व का विशेष सम्बन्ध वैश्य कर्म (कृषि, वाणिज्य और उनकी अधिष्ठात्री समृद्धि की देवी लक्ष्मी से है, इसलिए दीवाली वैश्य पर्व और लोग भी इसको वैश्यों का पर्व मानते हैं। शूद्र-पर्व होली का वर्णन उसके प्रकरण में यथास्थान होगा। दीपावली के अवसर पर, जैसा कि ऊपर दिखलाया जा चुका है, नवीन सावनी-सस्य के अन्न से होम होता है। इसी अवसर पर व्यवसायी जन अपने बही खातों का नवीन वर्ष आरम्भ करते हैं। आढ़त की दुकानों पर नए बही खाते दीपमाला से ही बदल जाते हैं। यह सब बातें इस पर्व का वैश्यत्व पूर्णरूपेण स्थापित करती हैं। परन्तु जिस प्रकार चारों वर्ण और उनके गुण कर्म मुख्यत: पृथक्-पृथक् होते हुए भी, गौण रूप से एक दूसरे के गुण कर्मों का समावेश चारों वर्णों में रहता है-ब्राह्मण वर्ण की सम्पत्ति स्वाध्याय, क्षत्रिय वर्ण की शूरता, वैश्य की समृद्धि और शूद्र का सेवा धर्म न्यूनाधिक चारों वर्णों के पुरुषों में पाया जाता है-उसी प्रकार हमारे पर्व भी विशेष वर्ग से सम्बन्ध रखते हुए भी सर्व साधारण के सम्मिलित (सांझे के) पर्व भी है।

ऋषि निर्वाण दिवस

किन्तु इस दीपमाला की महारात्रि का महत्व एक महा घटना ने और भी बढ़ा दिया। इसी के सायंकाल विक्रमी सं. 1940 तदनुसार 30 अक्तूबर सन् 1983 ई. मंगलवार को वीर विक्रम की 20वीं शताब्दी को अद्वितीय वेदोद्धारक और वर्तमान आर्य समाज के संस्थापक तथा आचार्य महर्षि दयानन्द की उच्च आत्मा ने इस नश्वर शरीर का परित्याग करके जगज्जननी के क्रोड में आश्रयण का आनन्द प्राप्त किया था। महापुरुषों का देहावसान साधारण मनुष्यों की मृत्यु के समान शोक जनक और रुलाने वाला नहीं होता। उनका प्रादुर्भाव और अन्तर्धान दोनों ही लोक-कल्याण और आनन्द प्रदान के लिए होते हैं। महापुरुषों का इस लोक में आगमन तो लोकाभ्यूदय के लिए प्रत्यक्ष ही है। किन्तु उनका इहलोक लीला संवरण भी आनन्द का हेतु होता है। वे परोपकार में अपने प्राणों को अर्पण करते हैं। संसार के सुख के लिए अपने शरीर की बलि देते हैं, इसलिये जनता उनके बलिदान पर उनकी कीर्ति का कीर्तन और गुणगान करके एक प्रकार का आनन्दानुभव करती है। उनका बलिदान स्वयं जनता के लिए परोपकारार्थ देहोत्सर्ग का उत्तम आदर्श स्थापित करके, जनता में अनुकरण, उदाहरण तथा सत्सम्प्रदाय का प्रवर्तन और सुख का संयोजन करता है। इस पंच भौतिक शरीर को त्यागते हुए उनकी आत्मा स्वयं भी सन्तोष और आनन्द लाभ करती है। सन्तोष इसलिए कि वे अपने इस लोक में आने का उद्देश्य पूर्ण करते हुए अपने इस लोक के जीवन को परोपकार में विसर्जन कर रहे हैं और आनन्द इसलिये कि उनका जीवात्मा प्राकृतिक बन्धनों से मोक्ष पाकर परम पिता का संसर्ग व संयोग प्राप्त कर रहा है और साथ ही अपने प्रभु की इच्छा को पूर्ण कर रहा है। ''प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो।'' महर्षि दयानन्द के अन्तिम शब्द यही थे। किसी उर्दू कवि ने कहा है-

''राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है।''

इसीलिए वैदिक धर्मावलम्बी आर्यों में मोहम्मदियों के समान महपुरुषों के अन्तर्धान की स्मारक तिथियों पर शोकातुर होने व रोने पीटने की रीति नहीं है, प्रत्युत इन अवसरों पर उनकी गुणावली गाकर आत्मा में आनन्द का संचार किया जाता है। सिखों, कबीर-पन्थियों, दादूपन्थियों आदि सनातनधर्मी आर्य सन्तान (हिन्दुओं) के अन्य सम्प्रदायों में भी अपने धर्म संस्थापक गुरुओं के चोला छोड़ने के दिन भण्डारा रचाने की रीति है जिसमें उनके शब्द कीर्तन करने और कड़ाह प्रसाद बांटने का आनन्द मनाया जाता है और शोक लेशमात्र भी नहीं होता। फलत: आर्य जाति में शोक-प्रदर्शनार्थ कोई भी पर्व नहीं है, न ही शोक प्रदर्शन में किसी पर्वता (उत्सवता) का सम्भव है और अतएव मृत्युत्सव, शोकोत्सव व शोकपर्व पद ही असंगत और असम्बद्ध हैं। आर्यों के यहां किसी महात्मा के भौतिक देह त्याग के दिन की पुण्य तिथि को तिथि (पवित्र तिथि) निर्वाण दिन व अन्तर्धान दिवस कहा जाता है।

अत: आज महर्षि दयानन्द के गुणानुवाद का अवसर उपस्थित है। महर्षि दयानन्द के आर्य जनता पर इतने असंख्य और अनन्त उपकार हैं कि मादृश शूद्र लेखकों की निर्बल लेखनी उनके लिखने में असमर्थ है। जिस प्रकार समुद्र की विस्तृत बालुका में असंख्य और अनन्त कण होते हैं और जिस प्रकार दिनकर की

किरणावली की गणना नहीं हो सकती उसी प्रकार महापुरुष की भी गुणावली अगणनातीत और महिमा अप्रमेय होती है। विचारक उस पर विचार और मनन करते रहते हैं। कवि उसका कीर्तन करते रहते हैं। गायक उसके गान से स्वरसना को रसवती और पवित्र करते रहते हैं और संसारी जन उनसे शिक्षा ग्रहण करके अपना जन्म सुधारते रहते हैं। सच पूछिये तो संसृति सागर में महात्माओं की चरितावत्री ही तरणी है और उनके आदर्श कर्म ही ज्योति स्तम्भ हैं, जो भूले भटके से बटोहियों को मार्ग दिखलाते और पार लगाते हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र की जीवनी न जाने कितने कवीश्वरों के वाग्विलास का विषय बनी है। संस्कृत और हिन्दी काव्यों का प्रचुर भाग श्री रामचन्द्र के गुणानुवाद से ही व्याप्त है। रामकथा ने न जाने कितने पथिकों को सत्पथ दिखलाया है और न जाने उसने कितने भक्तों को भक्ति रस में आप्लावित किया है। योगिराज श्री कृष्ण का पवित्र चरित्र पचासों काव्यों, गानों और घर-2 की चर्चा का विषय बना हुआ है। उनकी भगवद् गीता का कर्मयोग सहस्त्रों आलसियों और उदासियों को कर्म मार्ग में प्रवृत्त करके कर्मण्य और कर्म वीर बना रहा है। भगवान तथागत के जीवन ने पचासों बौद्ध जातकों को घेरा हुआ है और वह विविध जातियों के करोड़ों नर-नारियों और राव-रंकों को शान्तिपाद बना है। कहां तक गिनाएं, संसार की सिरमौर भारत वसुन्धरा तो ऐसे अनेक महात्माओं के गुणगान से गुञ्जायमान है।

ऊपर कहा जा चुका है कि आज हमारे लिये भी एक महात्मा के गुणगान से अपने कर्ण कुहरों को पवित्र करने और उससे शिक्षा ग्रहण करने का सुयोग पुनरपि प्राप्त है। आओ, आज आचार्य दयानन्द के पवित्र चरित्र की कुछ विशेषताओं पर विचार करके अपने समय का सदुपयोग करें।

आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द के जीवन पर विचार करते हुए एक विचारक की दृष्टि से कर्मयोगों के नागारूप जिनमें उस कर्मवीर ने अपनी सारी आयु व्यतीत कर दी, तिरोहित (ओझल) नहीं रह सकते। यहां हमारा अभिप्राय उनकी आद्यावस्था के उन मत परिवर्तनों से नहीं है, जो सत्य की गवेषणा में उस जिज्ञासु व तत्वान्वेषी के विचारों में समय-समय पर होते रहे, प्रत्युत उनकी निश्चित कार्य पद्धति को ग्रहण कर चुकने और आर्य समाज की संस्था को स्थापित करके क्रमबद्ध कर्म क्षेत्र में अवतीर्ण होने पर जिन विविध रूपों में उस उपकारी ने जनता का उपकार किया है। **-आर्य पर्व पद्धति से साभार**

पृष्ठ 5 का शेष-दीप से दीप जलाते .....

जाता था, उस भारतवर्ष को विदेशी इतिहासकारों ने असभ्य, जंगली, आदिमानव सिद्ध कर दिया जिन्हें जीवन जीने का ढंग ही नहीं मालूम था। काल चक्र के इस क्रम में अनेकों दीपक अपने-अपने जीवन का प्रकाश करके बुझ गए। हम समुचित्त नेतृत्व के अभाव में छुआछूत, अन्धविश्वास, मूर्तिपूजा, जातिवाद आदि अनेक कुरीतियों से ग्रसित हो गए। सती प्रथा, बाल विवाह एवं पाखण्डों ने हमारे समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला कर दिया था। हमारी इस दुर्बलता का लाभ विदेशी मिशनरियों ने उठाना शुरू किया और हमारी संस्कृति पर ताबड़तोड़ प्रहार करने लगे।

हमारी संस्कृति सचमुच विचित्र है। यह संस्कृति हमें मरते-मरते भी बचा लेती है। यूनान मिश्र रोमां सब मिट गए जहां से, अब तक बाकि है नामोनिशां हमारा। हम जिस अन्धकार में अपना अस्तित्व ही भूल बैठे थे, उस अन्धकार से हमें छुटकारा दिलाने के लिए एक और दीपक जल उठा। इस भव्य दीपक का नाम था महर्षि दयानन्द सरस्वती। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस अन्धकार को दूर करने का भरपूर प्रयास किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने गुरू विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर जो प्रतिज्ञा की थी, उस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। दयानन्द ने अपने अचूक तर्क-तीरों के ताबड़-तोड़ प्रहार से स्वधर्मी पौराणिकों एवं विधर्मी ईसाई मुसलमानों के कुचक्रों के गढ़ तोड़ कर रख दिए। सोई आर्य जाति को नवजीवन दिया। भूले-भटके लोगों को सही दिशा बोध कराया, जाति स्वाभिमान जगाया। जन्मपरक जात-पात, अस्पृश्यता, अन्धविश्वास, मूर्तिपूजा, बाल विवाह एवं अनेक पाखण्ड़ों और कुरीतियों का समूल नाश करने का आह्वान किया। समस्त भारत दयानन्द रूपी दिव्य दीपक के प्रकाश से एक बार पुन: देदीप्यमान हो उठा।

आज हमें दीपावली के पर्व पर यह विचार करना होगा कि हम आर्य जन दीप से दीप जलाने की परम्परा का कितना निर्वहन कर पाएं हैं। दीपावली के पर्व पर हम भौतिक दीपक जलाकर भरपूर प्रकाश करने का प्रयास करते हैं, घर का कोना-कोना प्रकाशित करते हैं परन्तु क्या हमने अपने जीवन में ज्ञान रूपी दीपक जलाया है? जिस दीप परम्परा को महर्षि दयानन्द के पश्चात स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय आदि ने कायम रखा और महर्षि दयानन्द सरस्वती के पदचिह्नों पर चलते हुए अपना ज़ीवन अर्पण कर दिया। उन्हीं महापुरूषों की तरह हम भी महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेकर उनके सिद्धान्तों और वेद की वाणी को घर-घर तक पहुंचाने का प्रयास करें, तभी दीपावली का पर्व मनाना और दीप जलाना सार्थक हो सकता है।

वेदोद्धारक : महर्षि दयानन्द

ले०—श्रीमती सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन, जालन्धर

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में अपना मन्तव्य प्रकाश करते हुए लिखा है कि वे किसी नवीन मत की स्थापना नहीं कर रहे हैं बल्कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त द्वारा वेदों के आधार पर प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों को ही वे मानते हैं। वेदों को मानवजाति का अनादिग्रन्थ माना जाता है, जहां अन्य धर्मग्रन्थों के प्रणयन का समय निश्चित है वहां वेदों के निर्माण का सर्वमान्य समय अद्यपर्यन्त निर्धारित नहीं किया जा सकता है। हिन्दू समाज वेदों को अपौरुषेय मानता है। भारतवर्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक विविध भाषा वाले देश के सभी निवासियों के मन में वेदों के प्रति श्रद्धा का भाव विद्यमान है।

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में केवल वेद ही एकमात्र ऐसे ग्रन्थ हैं, जिनमें संस्कृत के अन्य ग्रन्थों की तरह कोई मिलावट नहीं हो पायी है क्योंकि वेदमन्त्रों को जैसा वह है, ठीक वैसे ही याद करने के साथ-साथ जटापाठ आदि से याद किये जाने की परिपाटी थी, पर वेदमन्त्रों का कोई अर्थ भी होता है, यह लोग न जानते थे और न समझते व मानते थे। वेद हम तक कैसे आये, यह आश्चर्य का विषय हो सकता है पर जिस किसी के भी माध्यम से वे आये, लोग वेदों को शब्दमात्र से जानते थे, उसके अर्थ से अधिकांश लोगों का कोई मतलब नहीं था। आज यह बात बहुत आसान प्रतीत होती है। पर जब छापाखाना नहीं था तब भी वेदों में बिना किसी मिलावट किये उसे सुरक्षित रखना दक्षिणी ब्राह्मण परिवारों का सम्पूर्ण मानवजाति पर बहुत बड़ा उपकार है।

वेद की संस्कृतभाषा लौकिक संस्कृत से अलग है। अत: सभी संस्कृतज्ञों के लिये भी वेद के मंत्रों को सही रूप में समझना टेढ़ी खीर था। अंग्रेजी शासक विदेशी मिशनरियों के सहयोग से भारतीयों को ईसाई बनाने में लगे हुए थे। उन्होंने वेदों का यूरोपीयन भाषाओं में अनुवाद इसलिए नहीं किया था कि लोग वेद की उदात्त शिक्षाओं से परिचित हों बल्कि वे चाहते थे कि भारत में इससे ईसाई मत के प्रचार में सहयोग मिले। वे तत्कालीन सुशिक्षित भारतीयों के मन में वेदों के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न करने के साथ-साथ यहां के निवासियों के मन में अपनी संस्कृति और धर्म के प्रति हीन भावना विकसित करने के उद्देश्य से वेदों का अनुवाद करने के लिये अग्रसर हुए थे।

उन दिनों वेदों को पढ़ने का एकमात्र अधिकार जन्मना ब्राह्मणों को ही था। शास्त्रों में कपोलकल्पित श्लोक बनाये गये थे कि स्त्री और शूद्र न पढ़ें यह श्रुति है। **स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति श्रुतेः।** गौतम धर्मसूत्र नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ में यहां तक लिख दिया गया कि यदि शूद्र वेद सुन ले तो उसके कान में सीसा और जस्ता भर दिया जाये। यदि वह वेदमंत्रों का उच्चारण करे तो उसकी जीभ काट ली जाये और उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायें।

दी लाईफ ऑफ रामकृष्ण के पृष्ठ १५९ में सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी साहित्यकार और विचारक रोम्या रोलां ने ऋषि दयानन्द को यह गौरव प्रदान किया कि उन्होंने ब्राह्मण होकर भी न केवल शूद्र और स्त्रियों को बल्कि मानवमात्र को वेद के पढ़ने-पढ़ाने और प्रचार करने का अधिकार प्रदान किया। स्वामी दयानन्द ने यजुर्वेद अध्याय-२, मंत्र २, आदि कई मन्त्रों का हवाला देकर सभी नरनारी को वेद पढ़ने-पढ़ाने को कहा है। चूंकि वेद में ऐसा लिखा है अत: वेदविरुद्ध बातों का विरोध करने का दु:साहस लोगों को नहीं होता था। १९वीं शताब्दी में हिन्दूसमाज में आई कुरीतियों के उन्मूलन के लिये १८७५ ई० में आर्य समाज की स्थापना से पूर्व ब्राह्मण समाज, प्रार्थना समाज, और थियोसोफिकल संस्था की स्थापना हो चुकी थी, पर उक्त सभी संस्थाओं के संचालकों को वेदों के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं थी क्योंकि वे संस्कृत नहीं जानते थे। अत: वे स्वामी दयानन्द की भांति वेदों को ईश्वरीय ज्ञान भी नहीं मानते थे। वे लोग यह मानते थे कि स्वामी दयानन्द ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानकर आर्य समाज को संकुचित बना दिया है। आलोचकों की राय थी कि यदि आर्य समाज वेदों को ईश्वरीय मानना छोड़ दे तो जनसाधारण में इसका व्यापक प्रभाव पड़ेगा पर स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के संगठन का आधार केवल वेदों को ही बनाया। जहां अन्य संगठन बिना वेद के विशाल हिन्दू समाज से कटकर इतिहास में अध्ययन का विषय रह गया है वहां आर्य समाज आज भी जनसाधारण को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहा है।

ऋग्वेद में १०५५२, यजुर्वेद में १९७५, सामवेद में १८७५ और अथर्ववेद में ५९७७ मन्त्रों सहित वेदों में कुल २०,३७९ मंत्र है। स्वामी दयानन्द सम्पूर्ण यजुर्वेद के अतिरिक्त ऋग्वेद के १०५५२ मन्त्रों में से केवल ५६७९ मन्त्रों का ही अनुवाद कर सके थे कि उनके आकस्मिक और अस्वाभाविक निधन ने वेदों के सम्पूर्ण हिन्दी अनुवाद कार्य में व्यवधान उत्पन्न कर दिया। स्वामी दयानन्द के हिन्दी वेदभाष्य के अधूरे कार्य को उनके अनुयायी विद्वानों ने बाद में पूरा किया।

आर्य समाज के विद्वानों द्वारा चारों वेदों पर कई हिन्दी भाष्य सहित वेदविषयक साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराया गया है। वेदों के उद्धारक के रूप में स्वामी दयानन्द को वेदों वाला ऋषि कहा जाता है। स्वामी दयानन्द ने वेदों को मानवजीवन के दैनिक उपयोग के लिये प्रेरणादायक स्त्रोत बताते हुए वेदमन्त्रों के आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक अर्थों के साथ-साथ व्यावहारिक अर्थ कर वेदों की दैनिक जीवन में उपादेयता स्थापित की है।

दीपमाला की दिव्यता

ले०—श्री प्रो० भद्रसेन जी, साधु आश्रम (होशियारपुर)

भारतीय पर्वों में दीपमाला का एक विशेष स्थान है। इस अवसर पर मुख्य रूप से तीन भावनाएं हमारे सामने आती हैं। जैसे कि प्रकाश, पवित्रता और (लक्ष्मी) पूजा।

प्रकाश-अमावस्या की काली रात को सर्वत्र दीप आदि जगमगाते हैं। अतएव इस पर्व को दीपमाला, प्रकाशपर्व, ज्योतिपर्व के नाम से भी स्मरण करते हैं। प्रकाश में वस्तुस्थिति स्पष्ट दिखाई देती है कि कोई चीज़ कैसे है और तभी हम किसी कार्य को करने में सक्षम होते हैं, अन्यथा नहीं अन्धकार में स्थिति स्पष्ट न होने से केवल कार्य का ही अभाव नहीं होता, अपितु ठोकर, भय, दुविधा की स्थिति भी बन जाती है। कार्य का न होना भी असफलता, असिद्धि का ही रूप या कारण बनता है।

हमारे शरीर में भिन्न-भिन्न कार्यों को करने के लिए अनेक इन्द्रियां हैं। उन में से आंख भी एक हैं, वह तभी देखने में समर्थ होती है, जब उसको प्रकाश प्राप्त होता है, क्योंकि भौतिक शास्त्र के अनुसार नेत्र तैजस इन्द्रिय है। अतः नेत्र को प्रकाश की सहायता आवश्यक है। दिन में स्वाभाविक रूप से सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है और रात को इसके लिए ही प्रकाश की व्यवस्था की जाती है। प्रकाशयुक्त होने से ही दिन, आदित्य आदि शब्द प्रयुक्त होते है। हमारे शास्त्रों में अनेक तरह के प्रकाशों, ज्योतियों और उनके साधनों का संकेत प्राप्त होता है। व्यवहार में लकड़ी, तेल, कोयला, गैस, बिजली आदि के यथाशक्ति किए जाने वाले प्रयोग इसी बात के समर्थक सिद्ध होते हैं। हां, प्रकाश के कारण ज्योति कारकों को भी देव कहा जाता है।

भौतिक शरीरधारियों के लिए प्रकाश अनिवार्य है, अतएव वे दिन और प्रकाश से प्यार करते हैं। यह ठीक है कि उल्लू रात में भी देख सकता है, तभी उसको निशाचर कहते हैं। वस्तुतः बिल्ली, उल्लू आदि की आंख में ऐसा विशेष भौतिक तत्त्व होता है, जिससे वे देख सकते हैं। मानव समाज के लिए तो प्रकाश अनिवार्य है और तभी तो 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' 'तेजोऽसि तेजो मयि धेहि' की प्रार्थना तथा कृति सदा ही प्रिय रही है।

अन्धकार में दिखाई न देने से जहां कार्य करना कठिन हो जाता है, वहां ठोकर, भय, दुविधा की सम्भावना बढ़ जाती है। अतः अन्धकार का जहां मुख्य अर्थ अन्धेरा है, वहां अन्धेर-अन्याय, शोषण, अत्याचार के अर्थ में भी आता है। तभी तो कहते हैं-क्यों अन्धेर मचा रखा है। यह स्थिति किसी को भी प्रिय नहीं, क्योंकि तब सब कुछ चौपट हो जाता है।

प्रकाश शब्द प्र पूर्वक काश दीप्ती धातु से बनता है, दीप्ति चमक को कहते हैं। प्रकाश से व्यवस्था बनती है, जिससे कार्य करना सरल हो जाता है और तब टिकाव या स्थायित्व रहता है। इसी का दूसरा नाम सत्य भी कहा जा सकता है, क्योंकि उसमें अन्दर-बाहर की भिन्नता, छल का स्थान नहीं है। अर्थात् प्रकाश से जो जैसा है, वह रूप में सामने आ जाता है। जैसे कि खाने से पेट भरता है, शरीर पुष्ट होता है, जीवन चलता है। यह बात स्पष्ट, सुनिश्चित, दुविधा से दूर और सत्य है। निरुक्तकार ने अग्नि, सूर्य आदि देवों का आकार मानवों जैसा शरीरधारी है या नहीं? इस पर चर्चा करते हुए दो टूक निर्णय दिया है कि 'अपितु यद् दृश्यते अपुरुषविधं तत् 7, 2 अर्थात् जैसा रूप हमें उनका स्पष्ट दिखाई देता है, वैसा ही मानना चाहिए। इस सारे का भाव यही है कि 'हाथ कंगन को आरसी क्या' अर्थात् स्पष्ट, सुनिश्चित को बिना झिझक के स्वीकार करना चाहिए।

वस्तुतः विज्ञान का भी यही तात्पर्य है कि प्रकाश की तरह जो स्पष्ट, सुनिश्चित है, उसको वैसा ही स्वीकार करना, क्योंकि कार्य-कारण के सम्बन्ध से जब किसी घटना, बात का परीक्षण किया जाता है, तो उससे जो अनुभव, परिणाम सामने आता है, उसको स्वीकार करना ही वैज्ञानिक भावना है। जैसे कि कृषि की प्रक्रिया में परीक्षणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि कैसे भूमि में कब, कैसे, किस बीज को बोने और सम्भालने से कौन सी फसल कैसी होती है। इसीलिए ही वेद ने हर समझदार को सुपरीक्षित, सुनिश्चित स्पष्ट समझ को अपनाने का सन्देश दिया है।

इससे यह सिद्ध हुआ कि भोजन की तरह जो प्रदेश, नदी, पर्वत, पदार्थ आदि भूगोल के तत्त्व जिस रूप में आज हमारे सामने स्पष्ट हैं, उनको उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए। जैसे कि गंगा कहां से निकलती है, कहां कहां बहती और उसका जल कैसा है, यह सब कुछ सर्वथा स्पष्ट है। इसको वैसा न

मान कर कल्पना की उड़ान में उड़ना कबूतर की तरह आंख मूंदने वाली ही बात हो जाती है। हां, कल्पना, अलंकार आदि का स्थान काव्य में होता है, न कि भूगोल में। अतः व्यवहार में जो बात, कार्य जैसा है, जिस तरह से सिद्ध होता है, उसको उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए। जैसे कि हम नदी को पार करना चाहते हैं, तो उसको तैर कर या नौका से या पुल से ही पार किया जा सकता है। यह बात प्रकाशवत सर्वथा स्पष्ट, सुनिश्चित है। पुनरपि यह समझना कि अमुक् का नाम विशेष के आधार पर पार किया था, तो यह बात केवल अपने मन की मान्यतामात्र ही है, न कि व्यावहारिक।

इसी तरह यह एक सचाई है कि 'पुरुषार्थ ही इस दुनिया में, सब कामना पूरी करता है' अर्थात् जिस कार्य की सिद्धि का जो ढंग है, उस से ही वह पूर्ण होता है। जैसे कि हम अपने कारोबार, रसोई आदि में देखते और अनुभव करते हैं कि प्रत्येक कार्य की सफलता उस की अपनी विधि से ही होती है, न कि मनमर्जी से। पुनरपि किसी विशेष नाम या तन्त्र-जन्म यन्त्र-मन्त्र से या विशेष तरह के पूजा-पाठ, जग, स्मरण से किसी भौतिक कार्य की सफलता समझना एक तरह से विज्ञान और सच्चाई से दूर भागने वाली बात ही है।

दीपावली की दूसरी भावना-पवित्रता। अतएव इस पर्व पर कई दिन पहले से ही सफाई, सफेदी का कार्य प्रारम्भ हो जाता है, क्योंकि वर्षा के कारण प्रयोग की वस्तुओं में सीलन, गन्दगी आदि आ जाती है इसीलिए इन दिनों स्वच्छता-अभियान चलता है। जिसमें वस्तु के अनुरूप स्वच्छता का ढंग अपनाया जाता है। यथा वस्त्रों के भेद से कुछ को साबुन से, कुछ को पाऊडर और कुछ को विशेष वस्तु के साथ जल को गर्म करके स्वच्छ करने का प्रयास किया जाता है। इसी तरह मिट्टी, ईंट, सीमेण्ट, संगमरमर, चिप्स आदि वाला जैसा भी जो भवन होता है, उस में तदनुरूप लिपाई, पुताई, सफेदी, रंग-रोगन आदि किए जाते हैं। व्यवहार की वस्तुओं की विविधता की दृष्टि से ही मनुस्मृति के पांचवें अध्याय में उन की सफाई के भिन्न उपायों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

भारतीय धर्म, साहित्य, संस्कृति में संस्कार, स्नान, शुद्धि, शौच, तप, योग, यज्ञ आदि शब्दों की बहुत ही चर्चा मिलती है। जिन का मुख्य भाव निखार से है और अधिकतम का महत्त्व निखार के साधन रूप में ही है। वस्तुतः भजन, पूजन, यजन का विधान भी हृदय शुद्धि आदि की दृष्टि से ही, तभी तो वेद का विधान है कि शुद्धाः पूता भवत् यजियासः ऋ० 10, 18, 1, आज भी हम अपने कारोबार को प्रारम्भ करने से पूर्व किसी न किसी रूप में सफाई और धूप, अगरबत्ती आदि का प्रयोग करते हैं। वेदादि शास्त्रो में अनेकधा जहां पवित्र शब्द आया है, वहां पवित्र बनाने वाली वस्तुओं की विस्तार से चर्चा भी मिलती है।

दीपमाला की तीसरी भावना-पूजा की है। हर भारतीय पर्व पर कुछ न कुछ पूजन अवश्य होता है। दीपावली पर विशेष रूप में कुछ लक्ष्मी का पूजन करते हैं, लक्ष्मी विषयक जो स्तोत्र हैं और सत्सम्बद्ध मान्यता के अध्ययन, मनन से यह स्पष्ट होता है, कि लक्ष्मी-सफाई, प्रकाश से जुड़ी हुई है, उस का अन्धकार और गन्दगी से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। तभी तो कहते हैं- लक्ष्मी का निवास वहीं होता है, जहां बाह्य रूप से स्वच्छ वातावरण हो और वहां आंतरिक रूप से भी स्वच्छता अर्थात् परस्पर शान्ति, सद्भाव, स्नेह, ईमानदारी हो, क्योंकि इन्हीं गुणों के कारण विश्वास उभरता है कि कारोबार के टिकाव का आधार हैं लक्ष्मी का मूलमन्त्र पुरुषार्थ, दक्षता ही है। अतः वही लक्ष्मी ग्राह्य है, जो अपने परिश्रम एवं गुणों से प्राप्त की जाए। लक्ष्मी का एक नाम चंचला भी है, क्योंकि यह एक स्थान पर टिकी नहीं रहती अर्थात् इसके लिए क्रियाशीलता, उद्योग, व्यापार आवश्यक है। हां इसका अन्धाधुन्ध (बेहिसाब) खर्च इसको हाथों में से फुर्र करके उड़ा देता है।

दीपमाला की ये सारी भावनायें पूरी तरह से महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन में समाई हुई हैं। महर्षि ने केवल कुछ विचारों का ही प्रचार नहीं किया, अपितु महर्षि ने हर विचार, बात में प्रकाश की स्थिति को ही प्रमुखता दी है। महर्षि की यह दृढ़ धारणा थी, कि हमारा प्रत्येक विचार, कार्य-शास्त्र तथा तर्क से सुसंगत, सुनिश्चित, स्पष्ट भी होना चाहिए। अतएव वेदों की प्रमाणिकता का प्रतिपादन करते हुए महर्षि ने अनेकधा लिखा है, कि वेद सूर्य, चन्द्र, जल, वायु आदि ईश्वरीय भौतिक पदार्थों की तरह ही सार्व भौमिक सार्वकालिक, सार्वजनिक हैं। अर्थात् वेद भी भौतिक पदार्थों की तरह सबके लिए समान रूप से पठनीय, ग्राह्य और व्यवहार्य हैं। महर्षि ने जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, वह जहां स्पष्ट शैली में है, वहां उन सिद्धान्तों का स्वरूप भी स्पष्ट रूप में है। इसी प्रकार महर्षि ने अन्तः-ब्राह्य पवित्रता पर बहुत ही बल दिया है और इसी दृष्टि से दशम समुल्लास में आचार और भोजन विषयक पवित्रता का विशेष विवेचन है। हां, अपवित्र जीवन का महर्षि की दृष्टि से कोई लाभ नहीं है। इन्हीं दोनों भावनाओं से जुड़ी हुई पूजा की प्रक्रिया का महर्षि ने विस्तृत प्रतिपादन किया है।

दीपावली पर्व एव ऋषि निर्वाण दिवस

ले०—रणजीत आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि पंजाब

दीपोत्सव एवं ऋषि यह निर्वाण दिवस दीपावली पर कार्तिक मास में आता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम 14 वर्ष का बनवास काटकर अयोध्या लौटे तो अयोध्या में दीपमाला की गई। इतिहास बहुत पुराना है। युगों-युगों से चला आ रहा है। दीपों का उत्सव हर परिवार चाहे छोटा हो या बड़ा अमीर हो या गरीब महलों वाला हो चाहे झुग्गी झोपड़ी में रहने वाला सभी दीपक जलाकर मर्यादा पुरुषोत्तम राम को याद करते चले आ रहे हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम धर्मपरायण थे। उन्हीं के मुख से संस्कृत के उत्कृष्ट कवि ने कहलवाया है-

भूयो भूयो भाविनी भूमिपाला, नत्वा नत्वा याचते रामचंद्र।
सामान्योयं धर्मसेतुर्नराणां, काले-काले पाल नीयो भवदभि:।

अर्थात्-हे भावी भूमि पाले! यह रामचंद्र विनम्रतापूर्वक आपके सम्मुख याचना कर रहा है कि धर्म परिपालन की जिस मर्यादा को मैंने संस्थापित किया है। आप भी उसका निरंतर पालन करें, धर्म परिपालन की मर्यादा मुख्य विषय है। धर्म का पालन कौन कर रहा है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को मानने वाले धर्म का पालन नहीं कर रहे मैं ऐसे महानुभावों को भी मिला हूं जो आते जाते कहीं भी किसी से मिलने पर अभिवादन करते हैं राम राम जी। राम राम जी। के राम का नाम जपने वाले राम की मर्यादा को नहीं समझे राम का भाईयों के प्रति स्नेह किसी को भूला नहीं लेकिन राम के मानने वाले अपने भाइयों के प्रति कड़वाहट रखते हैं। एक दूसरे के खून के प्यासे राम नाम की परिभाषा क्या जाने? एक घटना को बताना चाहता हूं। कोई विद्वान आर्य समाज में कथा का प्रसंग सुना रहे थे। वह कहते हैं कि मैं गाड़ी में यात्रा कर रहा था। दिल्ली के एक सज्जन मेरे सामने वाली सीट पर बैठते ही मुझे कहने लगे राम राम जी राम राम कहा मैने भी राम-राम जी कह दिया। यात्रा करते-करते जब प्रात: हुई तो वह सज्जन पुरुष मुह हाथ धोकर बड़ी श्रद्धा से लाल रंग के कपड़े से रामायण की पुस्तक निकाल कर पाठ करने लगे करीब 45 मिन्ट वह पाठ करते रहे तो मुझे बहुत अच्छा लगा मन में जिज्ञासा उठी यह तो बहुत धर्म प्रेमी सज्जन है। बड़ी श्रद्धा से बात कर रहे हैं। जब वह रामायण का पाठ कर चुके। मैंने पूछा भाई आपकी बड़ी श्रद्धा व आस्था है। रामायण में तो बोले रामायण का पाठ मैं निरन्तर 40 वर्ष से कर रहा हूँ। मुझे बहुत ही अच्छा लगा। मैंने जो भी रामायण के प्रसंग सज्जन पुरुष से पूछे झट से बहुत ही सुंदर जवाब दिया। बातें करते-करते पूछा भाई कहां रहते हो तो सज्जन पुरुष बोले मैं दिल्ली का बहुत बड़ा हीरे का व्यापारी हूँ। बहुत बड़ा कारोबार है। मेरा मैं दिल्ली मेरे पास आलीशान कोठी है। नौकर-चाकर हैं। बहुत सी गाड़ियां हैं। राम जी कृपा से फिर पूछा सज्जन पुरुष से भाई कहां जा रहे हो तो बोले मैं इलाहाबाद जा रहा हूं तो मैंने पूछा वहां भी आप व्यापार करने जा रहे हो तो सज्जन बोले नहीं मैं इलाहाबाद इसलिए जा रहा हूं कि वहां पर एक हमारा पुराना पुश्तैनी मकान है। उस मकान मेरे छोटे भाई ने अकेले कब्जा कर रखा है। मैंने उस भाई के ऊपर अदालत में केस कर रखा है। उसकी तारीख है इसलिए जा रहा हूं उस विद्वान जी से रहा नहीं गया। वह कहने लगे भाई आप 40 वर्ष से निरन्तर रामायण पढ़ रहे हो परंतु आप रामायण को नहीं समझ सके राम कहता है। मेरे को राज नहीं चाहिए। भरत कहता है मेरे को नहीं चाहिए। कहने का भाव है। राम को मानने वाले पहले राम को जाने फिर राम को माने चित्र और चरित्र का यही अंतर है। आर्य समाज तो यही कहता है। चरित्र की पूजा करो। चित्र की नहीं क्या है संदेश इस को जानो दीपावली से ऋषि दयानंद के जीवन की भी घटना जुड़ी है। इसी दिन इसी ने अपने पंचभौतिक इस नश्वर शरीर को छोड़ा था। एक दीपक बुझा किंतु वे लाखों लोगों को नव जीवन प्रकाश दे गए ऐसा अद्भुत विलक्षण पुण्य आत्मा योगी ऋषि त्यागी तपस्वी महापुरुष इतिहास में दुर्लभ है। यह दीपावली उन्हीं के उपकारों योगदान का और समिति का पर्व है। वह युगपुरुष संसार में सत्य धर्म की व वेद की ज्योति जला गए। वह युगों-युगों तक संसार को सन्मार्ग दिखाती रहेगी। यह सत्य के शोधक, सत्य वक्ता, सत्य प्रचारक, और सत्य पर शहीद हो गए। उन्हें गलत बातों के साथ कभी समझौता नहीं किया। यदि ढोंग पाखंड आदि के साथ समझोता किया होता तो 19वीं सदी के सबसे बड़े भगवान होते हैं। उन के कट्टर विरोधी भी अंदर से उनके प्रशंसक थे। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की उस जमाने में जो आर्य समाजी बने या स्वामी जी के संपर्क में आया। जिसने उन्हें देखा उसी का कायाकल्प हो गया ना जाने कितने गुरुदत्त महात्मा हंसराज श्रद्धानंद अमीचंद के जीवन सन्त तथा परोपकारी बन गए। लोग सिद्धांत से जुड़े थे। आर्य समाज के साथ जुड़े थे। सच्ची श्रद्धांजलि ऋषि दयानंद को तभी है। जब सभी आर्य बने आर्य बनावे परन्तु ऋषि के उपकारो व सिद्धांतों को भूलते जा रहे हैं जहां ऐसा प्राय: हो रहा है वहां ना तो राम भक्त हैं ना ऋषि दयानंद के भक्त हैं जो आर्य समाज के सिद्धांत के साथ खिलवाड़ करते हैं। वह आर्य समाज के शत्रु है। वह ऋषि के दीवाने नहीं हो सकते। आर्य समाज को बचाना है। ऋषि के सिद्धांतों को बचाना है तो सिद्धांतों के साथ खिलवाड़ मत करो। आपस में मिलकर-मिलकर कार्य करो यही ऋषि को सच्ची श्रद्धांजलि है। यह दीपावली का संदेश है।

जले दीप से दीप।
फैले सर्वत्र प्रकाश।
रहे मिल कर सभी सद्भावना से।
सर्वत्र समृद्धि का हो विस्तार।

ऋषि की निराली दीवाली

ले०—डॉ० महेश विद्यालंकार बी. जे. 29 पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली

दीपावली अन्धकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है। असत्य से सत्य, अज्ञान से ज्ञान, अन्धकार से प्रकाश, मृत्यु से अमृतत्व, पाप से पुण्य शरीर से आत्मा और प्रकृति से परमात्मा की ओर चलाने का प्रेरणा-पर्व है। आज बहिर्जगत में रोशनी, चमक-दमक भौतिक उन्नति-प्रगति, सुख-साधन आदि तेजी से बढ़ रहे हैं। अन्तर्जगत में अन्धकार, जड़ता, अशान्ति असन्तोष, इच्छाएं, वासनाएं, ईर्ष्या-द्वेष, अहंकार आदि का अँधेरा तेज़ी से बढ़ता जा रहा है। यह पर्व प्रतिवर्ष ज्ञान रूपी प्रकाश लाने व फैलाने का अमर सन्देश देने आता है। यदि जीव-जगत् को सुखी-शान्त, सन्तुष्ट और सर्वे भवन्तु सुखिन बनाना है तो सत्यज्ञान की आँखें खोलकर जीओ व चलो। तभी संसार में विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व तथा विश्वमानवता की दृष्टि, विचार एवं भावना आ सकेगी।

दीपावली का पर्व आर्य समाज के इतिहास में प्रेरक, स्मरणीय एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पर्व आजीवन विषपायी ऋषिवर देवदयानन्द के निर्वाणोत्सव की अमर बेला की पुण्यतिथि है। इसी दिन उन्होंने अपना पंच भौतिक-नश्वर शरीर छोड़ा था। ऋषि के तप, त्याग, तपस्या, सेवा, उपकारों योगदान आदि के प्रति कृतज्ञता, स्मरण एवं श्रद्धांजलि देने का स्मृति-दिवस है। युगों के बाद वरदान-रूप में प्राप्त महापुरुष के नश्वर शरीर के त्याग की विदा बेला है। वह देवपुरुष जाते-जाते भी असंख्य ज्ञान-दीप जला गया। न जाने कितनों को जीवन-दृष्टि दे गया। उसी मुक्तात्मा की अमर-कहानी दीवाली हर वर्ष दुहराने आती है। ऐसी देवात्माएँ दुनिया में कभी-कभी आती है। प्रभु की इच्छा से आती हैं और उसी की इच्छा में अपनी इच्छा को पूर्ण मानकर विदा हो जाती है। ऋषि का जीवन भी निराला था और दीवाली भी निराली थी।

ये प्रेरक पंक्तियाँ सत्य है-

सदियों तक इतिहास न समझ सकेगा,
तुम मानव थे वा मानवता के महाकाव्य।

आर्य समाज ऋषि का जीवन्त स्मारक है। ऋषि का समग्र जीवन-दर्शन, मन्तव्य, विचार, सिद्धान्त, उद्देश्य, आदर्श आदि आर्य समाज को वसीयत, विरासत तथा परम्परा में मिले। इन्हीं का प्रचार-प्रसाद एवं फलन करना ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। जितना आर्य समाज की विचार धारा का प्रचार-प्रसार और अनुयायी बढ़ेंगे, उतने स्वामी दयानन्द अमर होंगे। आज हम आर्यों के समक्ष ऋषि दयानन्द, आर्य समाज और सिद्धान्तों की रक्षा व प्रचार का ज्वलन्त प्रश्न खड़ा हुआ है। यदि इस पर सब मिलकर गंभीरता पूर्वक, ईमानदारी, त्यागभाव, सेवाभाव आदि की दृष्टि से चिन्तन-मनन व क्रियान्वयन नहीं करेंगे तो इतिहास हमें क्षमा नहीं करेगा। यदि ऋषि को जीवित, जागृत व अमर रखना है तो आर्य समाज को अपने सत्य-स्वरूप को पहचानना होगा। ऋषि दयानन्द ने जीवन भर नाम, यश, सुख, आराम आदि के लिए न चाहा, न मांगा और न संग्रह किया। कोई मठ, मन्दिर, स्मारक, गद्दी आदि नहीं बनाई। वे रातों में जागकर जीव-जगत में फैले हुए अज्ञान, अन्धकार, ढोंग, पाखण्ड, पाप-अधर्म, अन्धविश्वास आदि के लिए घन्टों करुण क्रन्दन किया करते थे। हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है। यह पीड़ा ऋषि की थी। वह युग पुरुष सारा जीवन जहर पीता रहा, पत्थर सहता रहा, गालियां-विरोध सुनता रहा। बदले में संसार को दया और आनन्द लुटाता रहा। वह सत्य का पुजारी जीवन भर असत्य, अधर्म, गुरुडम मूर्तिपूजा, अवतारवाद तथा वेद विरुद्ध बातों से अकेला लड़ता रहा, कभी गलत बातों से समझौता नहीं किया। सारे जीवन में कहीं भी चारित्रिक दुर्बलता, अर्थ व पद लोभ नहीं आने दिया। वह दिव्यात्मा हर पहलू से खरा ही उतरा। उनके कट्टर विरोधी, आलोचक भी अन्दर से प्रशंसक ही रहे। वह देवपुरुष उनसठ साल के डेपुटेशन पर संसार में आया था। घोर अविद्या में डूबी मानव जाति को वेद पथ और सन्मार्ग दिखाकर चला गया। सच तो यह है कि दुनिया ने ऋषि को समझा, जाना और माना ही नहीं।

दीवाली पर समस्त आर्य समाज व ऋषि भक्त ऋषि की स्मृति को निर्वाणोत्सव के रूप में मनाते हैं। निर्वाण शब्द मुक्त

होना, आगे बढ़ जाना और बुझ जाने के अर्थ में आता है। अजमेर के भिनाई भवन में अन्तिम समय में ऋषिवर शान्तभाव से लेटे थे। सूर्य अस्ताचल को बढ़ रहा था। वह महायोग अनुभव कर रहा था-आज प्रयाण बेला है। पूछा-आज कौन सा मास, पक्ष व दिन है? भक्त ने कहा-आज कार्तिक मास की अमावस्या और दीवाली का पर्व है। पूरे शरीर पर भयंकर फफोले थे। फिर भी उनका मुखमण्डल शान्त व प्रसन्न था। सबको संगठित होकर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया। थोड़ी देर बाद बोले-सभी खिड़कियाँ-दरवाजे खोल दो। प्रार्थना-मन्त्रपाठ किया। तीव्र स्वर से ओ३म् का उच्चारण करने लगे। शान्त भाव में मुख से उच्चरित होने लगा-हे दयामय सर्वशक्तिमान परमेश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अदभुत तेरी लीला है। यह कहकर लम्बी श्वास खींची और बाहर निकाल दी। प्रभु का प्यारा देवता अपनी इहलीला समाप्त कर प्रभु की शरण में चला गया। सभी भक्त जन असहाय होकर देखते रहे। पं. गुरुदत्त जी पहली बार ऋषि के दर्शन करने आए थे। ईश्वर पर उनकी दृढ़ आस्था नहीं थी। ऋषि की अन्तिम यात्रा के अपूर्व दृश्य को देखकर नास्तिक गुरुदत्त पक्के ईश्वर विश्वासी आस्तिक बन गए। उन्होंने सम्पूर्ण शेष जीवन ऋषि-मिशन के लिए समर्पित कर दिया। जाते-जाते भी ऋषि गुरुदत्त जी को ईश्वर विश्वास का सन्देश दे गए। ऋषि का सम्पूर्ण जीवन प्रेरक व शिक्षाप्रद था। मृत्यु भी प्रेरक बनी।

दीवाली पर प्रभु-भक्त योगी का विदा होना सन्देश दे रहा है-वेद ज्ञान की ज्योति को जलाये रखना और आर्य समाज को आगे बढ़ाते रहना। संसार के इतिहास में मृत्युजयी ऋषि ऐसे थे जो होश में तिथि, पूछकर, स्नान-प्रार्थना करके, प्रभु का स्मरण-धन्यवाद करते हुए, अपने विषदाता को क्षमादान देकर प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो कहते हुए गए। ऐसी अद्‌भुत चमत्कारी प्रेरक मृत्यु निराले मुक्तात्मा को ही सौभाग्य से मिलती है। ऋषिवर! तुम धन्य हो। तुम्हारा तप त्याग सेवा भरा आजीवन संघर्षपूर्ण इतिहास स्वर्णिम व प्रशंसनीय है। तुम्हारे उपकार व योगदान स्मरणीय एवं वन्दनीय है। तुमने न जाने कितने जीवन-पथ से भटके हुए लोगों को नव जीवन दिया। तुमने भारतीय स्वर्णिम इतिहास के प्रेरक पृष्ठों को संसार के सामने रखा। जिसने तुम्हें देखा, सुना, पढ़ा और जो सम्पर्क में आया। वह अमूल्य हीरा बन गया। तुम सत्य के अन्वेषक वक्ता, पुजारी, प्रचारक और अन्त में सत्य पर ही शहीद हो गए। तुम्हारा दूसरा पर्याय और कोई नहीं हुआ।

दीवाली ऋषि-स्मृति पर्व है। उस महामानव के उपकारों, योगदान, महत्त्व, विशेषताओं आदि को स्मरण व कृतज्ञता प्रकट करने की पुण्य तिथि है। संकल्प लेने, दुहराने और अपने को सुधारने की मंगल बेला है। ऋषि भक्तो! आर्यो! उठो! जागो! आँखें खोलो! अपने स्वरूप को पहिचानो! अन्तस में ज्ञानदीप जलाओ! प्रतिवर्ष परम्परागत दीवाली आती है।

हम आर्यजन भी ऋषि निर्वाणोत्सव मनाते हैं, मेला लगता है, भाषण होते हैं, भीड़ बिखर जाती है। हम अपना कर्तव्य पूरा समझते हैं। सोचो! क्या निर्वाणोत्सव की यही मूल चेतना, सन्देश व भावना है? ये पर्व, जयन्तियाँ, उत्सव, वेद कथाएं, यज्ञ, सम्मेलन आदि हमें जगाने, संभालने, आत्मबोध, व सत्यबोध कराने आते हैं और दृष्टि, सोच, विचार व ज्ञान देते हैं-क्या खोया, क्या पाया? कहाँ के लिए चले थे, कहाँ जा रहे हैं? जिन उद्देश्यों, आदर्शों, विचारों, सिद्धान्तों व नवजागरण के लिए जीवन बलिदानी ऋषि ने आर्य समाज बनाया था, जो हमें कर्त्तव्य व जिम्मेदारी सौंपी थी, ऋषि श्रद्धांजलि और ज्योति पर्व हमसे पूछ रहा है-उन कार्यों लिए हम क्या कर रहे हैं? क्या हमारा जीवन आर्यत्वपूर्ण है? कुछ नहीं किया तो कुछ करने का विचार संकल्प व व्रत लो। जब जाग जाओ, तभी सबेरा है। ऋषि भक्त व आर्य समाज का अनुयायी कहलाना है तो उनके बताए रास्ते पर चलो। यह ऋषि स्मृति का प्रकाश पर्व कह रहा है। अपने अन्दर के व्यर्थ के अहंकार, स्वार्थ, ईर्ष्या-द्वेष, पद-प्रतिष्ठा आदि के अज्ञान को ज्ञान विचार विवेक से हटाओ। मूल में भूल हो रही है। व्यर्थ के विवादों, झगड़ों, समस्याओं आदि में समय, शक्ति, धन व सोच को मत लगाओ। आर्य समाज के पास बहुत बड़ी विचार सम्पदा है। उसको संभालो। तभी ऋषि निर्वाणोत्सव की सार्थकता, उपयोगिता तथा सच्ची ऋषि श्रद्धांजलि होगी।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

॥ ओ३म् ॥

अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये ऽसम्भूतिमुपासते।

ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ।। य.40/3

जो ईश्वर के स्थान पर कारण रूप और कार्यरूप प्रकृति की पूजा करते हैं वह घोर अंधकार में गिरते हैं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित–1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

जिया लाल शर्मा	ललित मोहन पाठक	कुलवन्त राय	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

उत्क्राम महते सौभगाय।

य. 11/21

हे मनुष्य ! महान ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये आगे बढ़।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज, राहों रोड, नवांशहर

WebSite: www.blmgirlscollege.com, email:blmcollege@yahoo.com
Phone No. 01823-220026, Fax: 01823-221474

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

प्रमुख विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
3. गरीब वर्ग की छात्राओं के लिये विशेष सुविधा।
4. एम.ए. (राजनीति विज्ञान, हिन्दी), पी.जी.डी.सी.ए., बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., ड्रैस डिजाइनिंग डिप्लोमा (U.G/P.G), कॉस्मोटॉलोजी डिप्लोमा (U.G/P.G) आदि कोर्स की व्यवस्था।
5. खेलों की उचित व्यवस्था (गत वर्षों से हैंडबाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय स्थान)

❖❖❖❖❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

डा.सी.एम.भण्डारी	विनोद भारद्वाज	तरणप्रीत कौर
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म्॥

संसमिद् युवसे वृषन्नग्ने विश्वायर्न्य आ।

इडस्पदे समिध्यसे न नो वसून्याभर॥ १ ।।

हे सुखों के वर्षक, सबके स्वामी, प्रकाश स्वरूप परमात्मन्! आप संसार के सब पदार्थों की उचित व्यवस्था के अनुसार परस्पर मिलाते हो, और फिर उनका वियोग भी आप ही करते हो, आप अपनी शक्तियों से इस धरती पर चमक रहे हो, हे ऐसे महान् सामर्थ्य वाले भगवान ! आप हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

दीपावली के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।।

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

देशबन्धु भल्ला एडवोकेट	सोहन सिंह	जे.के.दत्ता	ए.एस. गिल
प्रधान	उपप्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अस्मासु भद्र द्रविणानि धत्त।

(कल्याणकारी ऐश्वर्य धन हम सब को प्राप्त हो)

न त्वहं कामयेत राज्यम् न सुखम् न पुनर्भवम्।

कामयेत दुख तप्तानाम् प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

डी.ए.एन.आर्ट एंड क्राफ्ट (A.C.T) कालेज नवांशहर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में

निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. नवांशहर क्षेत्र में आर्ट्स एंड क्राफ्ट का एक मात्र कालेज
2. अनुभवी तथा ट्रेंड स्टाफ।
3. सुसज्जित मैदान।
4. शानदार पेटिंग सिखाने का प्रबन्ध।
5. सभी प्रकार की आधुनिक विद्याओं से युक्त।
6. बोर्डिंग का उचित प्रबन्ध
7. शत्-प्रतिशत् परीक्षा परिणाम।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की ओर विशेष ध्यान

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

विनोद भारद्वाज	बख्तावर सिंह	विपिन तनेजा	आशा शर्मा
प्रधान	**उपप्रधान**	**सैक्रेटरी**	**प्रिंसीपल**

॥ ओ३म् ॥

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥

(सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी) हे मनुष्यो, तुम परस्पर मिल कर चलो, मिल कर बातचीत करो, ज्ञानी बन कर तुम अपने मनो को भी एक बनाओ, जैसे कि तुम से पहिले विद्वान देव पुरुष सम्यक् ज्ञान वान् और एक मति वाले होकर अपना भाग प्राप्त करते रहे हैं।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. *अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।*
2. *नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।*
3. *अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।*
4. *आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।*

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ललित मोहन पाठक	**ललित शर्मा**	**जिया लाल शर्मा**	**आरती कालिया**
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवाः क्षुधमिद् वधं ददुः, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै. स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
2. धार्मिक शिक्षा।
3. कम्प्यूटर शिक्षा।
4. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।
5. विशाल क्रीडा क्षेत्र।
6. सुन्दर भवन।
7. हरे-भरे वृक्ष।
8. उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।
9. हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	**ललित कुमार शर्मा**	**अचला भल्ला**	**सतीश कश्यप**
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्

ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

-महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार विमन नवांशहर

❒ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❒

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

◆◆◆

विनोद भारद्वाज	**एस.के.बरूटा**	**डा. सरोज भल्ला**
प्रधान	सचिव	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि।

(ऋग्वेद. 1/4/6)

हम सदा परमेश्वर की शर्मणि–शरण में रहें।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

1. शहर के मध्य स्थित अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

सतीश शर्मा
सैक्रेटरी

सविता उप्पल
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो! मेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

मुनीष मदान	विनोद गांधी	रेखा कौल
प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

सख्ये ते इन्द्र याजिनो मा भेम शवसस्पते।

त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम।।

भावार्थ: प्रभु के भक्तों में ऐसा विलक्षण बल आता है कि वे किसी से भी डरते नहीं क्योंकि जिनका रक्षक स्वयं प्रभु होवे, उनको डराने वाला कौन हो सकता है? वहीं प्रभु सदा अपराजित और हमेशा विजयी है इसलिये उसी को नमन करने योग्य है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य गर्ल्ज सी. सै.स्कूल, पुराना बाजार, दरेसी रोड लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में शहर की एक सौ दस वर्ष पुरानी संस्था

प्रमुख विशेषताएं

1. नर्सरी कक्षा से बारहवीं कक्षा तक गणित व विज्ञान विषयों के लिये **Smart Classes** की विशेष व्यवस्था।
2. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम में पढ़ाने का उचित प्रबन्ध।
3. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ
4. स्वच्छ जल हेतु फिल्टर, बिजली के लिये जनरेटर, अग्निशमन यंत्रों इत्यादि सभी आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न
5. सत्र 2012-13 में बोर्ड परीक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम।
6. गत वर्ष की अपेक्षा छात्राओं की संख्या में वृद्धि।
7. कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
8. भव्य भवन खुले व हवादार कमरे, समृद्ध पुस्तकालय व सुसज्जित साईंस लैब।
9. छात्राओं की ज्ञान वृद्धि के लिये शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाने की व्यवस्था।
10. सांस्कृतिक व सह सहायक गतिविधियों का आयोजन
11. **Morning Assembly** में नैतिक मूल्यों व अच्छे संस्कारों को सुदृढ़ करने पर विशेष चर्चा।
12. प्रबन्धकृर्त सभा के सभी सदस्य संस्था को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिये निरन्तर प्रयासरत।

विशेष नोट: जरूरतमंद व योग्य छात्राओं के लिये निशुल्क पुस्तकें, वर्दियां, स्वैटर व जूते।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

सुशील मोदगिल	जयप्रकाश	रवि महाजन	राजेश शर्मा	ज्योति किरण शर्मा
प्रधान	उपप्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः॥

भावार्थ- हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

दीपावली (ऋषि निर्वाण दिवस) के पावन पर्व पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री-नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक इंग्लिश/ हिन्दी मीडियम, पंजाबी पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विद्युत जेनरेटर तथा कैंटीन की उत्तम सुविधा।
6. खेलने के लिये खुला मैदान।
7. शानदार बोर्ड परीक्षा परिणाम।
8. उत्तम पुस्तकालय की सुविधा

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

संत कुमार आर्य	मुनीष मदान	निर्मल कान्ता
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना ऋ. 1/3/12

ज्ञानमयी वेद वाणी अपने ज्ञान से ही बड़े भारी ज्ञान सागर का उत्तम रीति से ज्ञान कराती है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व

के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से सम्बन्धित संस्था

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

में एल.बी.एस. कॉलजिएट सी.सै.स्कूल के अधीन +1, +2 के साथ स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की स्तरीय शिक्षा का प्रबन्ध है।

बी.ए.कक्षाओं में हिन्दी साहित्य, पंज़ाबी, पंजाबी साहित्य, अंग्रेजी, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत, इक्नामिक्स, राजनीतिक शास्त्र, इतिहास, पब्लिक, एडमिनिस्ट्रेशन, कम्प्यूटर एप्ली, फाईन आर्ट्स, गणित, साइकॉलॉजी, संगीत (कंठ्य), होम साईंस, फिजीकल एजुकेशन, ऑफिस मैनेजमेंट, फैशन डिजाइनिंग विषय पढ़ाये जा रहे हैं।

स्नातकोत्तर स्तर पर एम.ए.पंजाबी, एम.ए. इतिहास, एम.एस.सी.-आई.टी. एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्ली. एम.एस.सी. फैशन डिजाइनिंग एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन ड्रैस डिजाइनिंग, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कास्मेटॉलॉजी की कक्षाएं सफलतापूर्वक चल रही हैं।

इनके साथ बी.सी.ए., बी.बी.ए. तथा बी.कॉम के शिक्षण का भी प्रबन्ध है।

विशेषताएं

1. वातानुकूलित विशाल पुस्तकालय
2. बहुद्दश्यीय विशाल सभागार
3. सुविधा सम्पन्न छात्रावास।
4. वाई फाई प्रांगण।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों से लैस प्रांग्रण।
6. उच्च तकनीकी युक्त वातानुकूलित कम्प्यूटर प्रयोगशाला।
7. जैनरेटरों एवं वाटर कूलरों (आर.ओ.)
8. एन.सी.सी.फैशन डिजाइनिंग का सुचारू प्रबन्ध।
9. गांवों से छात्राओं को लाने ले जाने हेतु बसों का उचित प्रबन्ध।

शैक्षिक एवं शिक्षेत्तर उपलब्धियों के लिये पंजाबी विश्वविद्यालय में अपनी विशेष पहचान रखने वाली संस्था

डा.सूर्यकांत शोरी	भारत भूषण मैनन एडवोकेट	केवल जिन्दल	डा.नीलम शर्मा
प्रधान	महासचिव	उपप्रधान	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

देवत्तं ब्रह्म गायत।

ऋग्वेद 1/37/4

ईश्वर प्रदत्त वेद का सदा गान करो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖

आर्य माडल स्कूल, बरनाला

❖

विश्व गुरु स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पद्चिन्हों पर चल कर अपना मानव जीवन सफल बनायें तथा राष्ट्र को सही दिशा दें।

❖

■ विशेषताएं ■

1. योग्य, परिश्रमी और अनुभवी अध्यापक वर्ग।

2. प्रबन्धक समिति के शिक्षित और दूरदर्शी सदस्यों द्वारा पूर्ण सहयोग।

3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान।

4. खेलों के साथ साथ सह पाठ्यक्रम क्रियाओं के प्रति विशेष ध्यान।

5. शिक्षण विकास की परीक्षा हेतु समयानुसार परीक्षाएं।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें आर्य माडल स्कूल बरनाला में दाखिल करवाये।

सम्पर्क करें

हरमेल सिंह जोशी	भारत भूषण मेनन	राजेश कुमार गांधी	उर्मिल सिंगला
प्रधान	*मैनेजर*	*सैक्रेटरी*	*प्रिंसीपल*

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के

पावन पर्व पर

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत–प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह–क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध।

प्रेम कुमार बांसल एडवोकेट
प्रधान

भारत भूषण मैनन एडवोकेट
वरिष्ठ उप प्रधान

संजीव शोरी
मैनेजर

भारत मोदी
सचिव

रामकुमार सोबती
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

भावार्थः हे प्रभु हमें अंधकार से हटा कर प्रकाश की ओर ले चलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

❑ विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित विशाल भवन।
2. उच्च शिक्षित, अनुभवी तथा निष्ठावान अध्यापक।
3. सांस्कृतिक गतिविधियां तथा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन
4. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा (2012) में प्रिया ने पंजाब में सोहलवां तथा जिला बरनाला में पहला स्थान प्राप्त करके नाम रोशन किया।
5. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
6. फिल्टर पानी का प्रबन्ध और साइलेंट जेनरेटर।
7. बच्चों के लिये प्राथमिक सहायता उपलब्ध।
8. बच्चों के लिये हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों ही माध्यम उपलब्ध।

☆☆☆

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

भारत भूषण मैनन	भारत मोदी	पवन सिंगला	बसन्त शोरी
प्रधान	उप प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर

संजीव शोरी	वन्दना गोयल	अनीता मित्तल
सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल	डायरैक्टर

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, श्रुणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥9॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं– हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

अनिल कुमार	**निहाल चंद एडवोकेट**	**सुषमा कुमारी**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अस्मे धेहि जातवेदो महिश्रवः

ऋग्वेदः 1/97/4

हे ज्ञान स्वरूप प्रभो ! आप हम में उत्तम यश, धन और ज्ञान धारण करें।

ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं

वैदिक कन्या पाठशाला औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. आधुनिक कम्प्यूटर लैब।
5. वाटर कूलर तथा ध्वनि रहित जनरेटर का उचित प्रबन्ध।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. साफ सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
8. आठवीं कक्षा तक के बच्चों को दोपहर के मुफ्त भोजन की सुविधा एवं मुफ्त पुस्तकें।
9. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
10. गरीब एवं योग्य छात्राओं को आर्थिक सहायता।
11. बोर्ड की कक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम तथा सैशन 2011-12 में दसवीं की दो छात्राओं तथा+2 की दो छात्राओं ने स्टेट मैरिट में स्थान प्राप्त किया।
13. कल्चर संगीत कार्यक्रम के लिये योग्य तथा अनुभवी शिक्षा का प्रबन्ध।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	**अशोक कुमार अग्रवाल**	**विजय अग्रवाल**	**नीरू शैली**
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी ओर महाश्सय होते हैं, सत्पुरुष कहलाते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै. स्कूल, बठिंडा

Ph.No. 0164-2238328

विशेषताएं:

1.नगर के मध्य स्थित।

2.योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।

3.विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।

4.शानदार परीक्षा परिणाम

5.नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

6.प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, R.O पानी आदि मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

पी.डी गोयल एडवोकेट
प्रधान

रमेश कुमार गर्ग
उप-प्रधान

गौरी शंकर
मन्त्री

अश्विनी कुमार मोंगा
उप प्रधान

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

॥ ओ३म् ॥

सत्पुरुषः- सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबके हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के

पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

मुख्य विशेषताएं

1.उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग

2.खुले तथा हवादार कमरे।

3. वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल।

4. शानदार परीक्षा परिणाम

5. उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र कौशिक	**अश्विनी मेहता**	**चन्द्रमोहन**
प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदां के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां,जालन्धर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये,सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

सरदारी लाल आर्य
प्रधान

विशाल पुरुथी
मैनेजर

श्रीमती सारिका
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरितादूवाध्स्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

***

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

***

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के विकास के लिये निरन्तर कार्यरत, नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।

***

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा
प्रधान

सुधीर शर्मा
प्रबन्धक

मीनू सलूजा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

इमा ब्रह्मा सधमादे जुषस्व

ऋग्वेद 20/11/3

इन वेद वचनां को, हे विद्वन ! हर्षस्थान व सभा सदन में सेवो अर्थात बोलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10.रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11.प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

शिक्षा जगत में महकता हुआ चमन

सोम प्रकाश	शैलेन्द्र मेहता	किरण जिन्दल
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उसको पंडित कहते हैं।

–महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

डी.एन.माडल सी.सै.स्कूल मोगा

❒ विशेषताएं ❒

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा

मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा	कृष्ण गोपाल	मोनिका बांसल
प्रधान	उपप्रधान	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ **(यजु. 30/3)**

(सवित) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार पर शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयां को, दुरवस्थाआं को (परा+सुव) दूर कीजिए। (यत्भद्रम्) जो भद्र [है] (तत् नः) वह हमें (आसुव) दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज मोगा

❑ ***आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर*** ❑

संस्था के विशेष आकर्षण

1. *प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।*
2. *पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।*
3. *गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।*
4. *मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।*
5. *विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।*
6. *चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।*
7. *हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।*

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा	**कृष्ण गोपाल**	**एस.के. शर्मा**
प्रधान	उपप्रधान	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पति वाचं नः स्वदतु ॥ (यजु. 30/3)

हे परमात्मा! सबको सत्कर्म करने और सत्कर्मों का संरक्षण करने की बुद्धि दो। अपने उत्तम ज्ञान से पवित्र करने वाले ज्ञानी से हम सब ज्ञान को पवित्र करें। उत्तम वक्ता द्वारा हम सब वाणी को मधुर बनाएं, जिससे हम सबकी उन्नति हो

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज आफ एजुकेशन

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।

2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।

3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।

5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।

6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।

7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

कृष्ण गोपाल
उपप्रधान

उमेश धीमान
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीप-उत्सव "दीपावली" के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल हाई स्कूल-मोगा

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य, चरित्र निर्माण और सर्वतोमुखी विकास के लिये सेवा का अवसर दें।

विशेष आकर्षण

1. सुसज्जित भवन, खुले हवादार कमरे।
2. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
3. हाई पावर विद्युत जनरेटर, शुद्ध एवं शीतल पेयजल।
4. आधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला, स्मार्ट कक्षाएं व यंत्रों से लैस साईंस व गणित प्रयोगशाला।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों का विद्यालय में उचित प्रबन्ध।
6. उच्च स्तर की सफाई व बढ़िया अनुशासन।
7. नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा पर बल।
8. +2 की कक्षाओं का आरम्भ शीघ्र।
9. खेलों का उचित प्रबन्ध।
10. आवश्यक पाठ्य सामग्री युक्त पुस्तकालय।
11. वैदिक शिक्षा व साप्ताहिक हवन यज्ञ।
12. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सत्यप्रकाश उप्पल	नरेन्द्र सूद	समीना शर्मा
प्रधान	मैनेजर	प्राचार्य

ऋषि चरणों में श्रद्धाँजलि

ले०—श्री देवेन्द्र गुप्ता 342 बख्शी नगर, जम्मू

अमर लोक से आए दयानन्द अमृत पान कराने को।
भेद-भाव और छुआ-छूत के मिथ्या भ्रम मिटाने को।

पीड़ित मानवता के धरती पर कष्ट मिटाने को।
लोप हुई वेदों की विद्या को पुनः दर्शाने को।

ऋषियों के प्राचीन धर्म की गौरव गाथा गाने को।
आर्य जाति की डूबती नैय्या परले पार लगाने को।

बन्धन से पराधीन राष्ट्र को सत्वर मुक्त कराने को।
भारत से अज्ञान निशा की कालिमा मिटाने को।

वेद की परम पुनीत और पावन मधुर ऋचायें सुनाने को।
सत्य का करके अनावरण असत्य विचार मिटाने को।

जाति को सुमार्ग दिखा कर नैतिक शक्ति बढ़ाने को।
मिथ्यावाद आडम्बर और कुप्रथायें जग से मिटाने को।

दे के चुनौती विधर्मियों को सत्यार्थ प्रकाश बनाने को।
अत्याचार अनैतिक कृत्य और आतताईता मिटाने को।

ईश्वर की सर्वज्ञ स्वतन्त्र सत्ता का भास कराने को।
बुतों की पूजा से मानव को मुक्ति दिलाने को।

तर्क और युक्ति से बुद्धि परक बातें मनवाने को।
कौम परस्ती और मतान्धता की दीवार गिराने को।

वेदों के विरुद्ध भाष्य कर आस्तिकता फैलाने को।
नारी जाति का मूल्यांकन कर मातृत्व दर्शाने को।

कलह क्लेश, अकरुणा, क्रंदन से जगजीवन बचाने को।
त्रस्त मानवता को त्राण दे विश्व बन्धुत्व बढ़ाने को।

विष के स्वयं प्याले पी कर अमृत पान कराने को।
आये थे युग पुरुष दयानन्द भारत राष्ट्र जगाने को।

परम धैर्य के युगावतार दयानन्द तुम थे दया के सागर।
करुणा, मैत्री और अहिंसा भाव किए थे तुमने उजागर।

युगों-युगों तक स्मरण करेंगे दयानन्द तुम्हें जग के मानव।
तेरे ऋण से उऋण होंगे आर्य जाति के भावी बालक।

कोटि-कोटि प्रणाम तुम्हें हो देव दयानन्द युग प्रवर्तक।

''दीपावली के उपलक्ष्य में''

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, कोलकत्ता

दीवाली है अन्धकार पर प्रकाश की विजय का त्यौहार।
इसलिए छोड़ दो अन्धविश्वास, पाखण्ड, जिनका नहीं है कोई आधार।।

दीपावली है अन्याय पर न्याय की विजय का त्यौहार।
मिटाते रहो अन्याय, स्थापित करो न्याय, यहीं है ''गीता'' का सार।।

दीपावली है अधर्म पर, धर्म की विजय का त्यौहार।
अन्य मतों को छोड़, वैदिक धर्म अपनाओ जो देता है आत्मा को आहार।।

दीपावली है बेईमानी पर, ईमानदारी की विजय का त्यौहार।
जीवन में यदि उन्नत होना चाहो तो करो सभी से ईमानदारी का व्यवहार।।

दीपावली है कूड़ा–कर्कट पर, सफाई की विजय का त्यौहार।
कूड़े–कर्कट से करो सदा नफ़रत और सफाई से करो हमेशा प्यार।।

दीपावली है हँसो और हँसाओ और सब को प्रसन्न रखने का त्यौहार।
सब से रखो अच्छा व्यवहार, मत करो किसी भी प्राणी पर अत्याचार।।

अधिकतर लोग समझते हैं, इसे रावण पर राम की विजय का त्यौहार।
जो भी हो, इससे सीखें, कैसे आवें मेरे जीवन में ''राम'' के संस्कार।।

दीपावली का त्यौहार हमें सिखलाता है सब से करना प्यार।
न कभी किसी पर जुल्म करो, न करो किसी से गलत व्यवहार।।

यदि करेंगे हमेशा हर व्यक्ति से प्यार और रखोगे सब से सद् व्यवहार।
तभी हम कह सकेंगे, मनाया हमने सही अर्थों में दीपावली का त्यौहार।।

दीवाली है बुराईयों को छोड़, अच्छाईयों को अपनाने का त्यौहार।
कहता है ''खुशहाल'' इस सिद्धान्त को ले, अपने जीवन में उतार।।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org